भारत पुनरूत्थान के शिल्पकार
स्वामी विवेकानंद

● सुनील आम्बेकर ●

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

03, मार्बल आर्च, सेनापती बापट मार्ग, माटुंगा रोड (प.रे.) स्टेशन के सामने,
माहिम, मुंबई.-400016 दूरभाष:022–24306321,फैक्स :022– 24313938
Email : info@abvp.org, Website : www.abvp.org

भारत पुनरूत्थान के शिल्पकार - स्वामी विवेकानंद

सुनील आम्बेकर

© : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

प्रथम संस्करण : मई, 2013

प्रतियाँ : 10000

प्रकाशक : सी.एम.धाकड़
केन्द्रीय कार्यालय मंत्री

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
03, मार्बल आर्च, सेनापती बापट मार्ग,
माटुंगा रोड (प.रे) स्टेशन के सामने,
माहिम, मुंबई – 400016

दूरभाष : 022 – 24306321

फैक्स : 022 – 24313938

Email : info@abvp.org,

Website : www.abvp.org

मुद्रक : रचना मुद्रण, दादर, मुंबई-14, फोन : 4124410

सहयोग राशि : 15.00 रुपये

प्रस्तावना

भारत के महान सुपुत्र स्वामी विवेकानंद की 150 वी जयंती को पूरे देश में विविध कार्यक्रम तथा उपक्रमों के माध्यम से मनाया जा रहा है।

विवेकानंद के जीवन के हर पहलू तथा विभिन्न विषयों पर उनके विचार आज भी प्रासंगिक है तथा हमारा मार्गदर्शन करते है। युवाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय स्थान स्वामी विवेकानंद का ही है।

आशा है, 150 वी जयंती के निमित्त अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री सुनील आम्बेकर द्वारा **भारत पुनरुत्थान के शिल्पकार - स्वामी विवेकानंद** विषय पर लिखी गयी तथा अभाविप द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक आप सभी के लिये विवेकानंद के विचारों को समझने में सहायक सिद्ध होगी।

दिनांक : 29 मई 2013

प्रा. मुरली मनोहर
राष्ट्रीय अध्यक्ष,अभाविप

मनोगत

वर्ष 1983 में मैने 10 वी कक्षा उत्तीर्ण कर 11 वी कक्षा (विज्ञान) में नागपुर के प्रसिद्ध शैक्षणिक संस्थान हिस्लाप कॉलेज (Hislop College) में प्रवेश लिया था। उस वर्ष महाविद्यालय का शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा था। इस निमित्त सेंट हिस्लाप को याद करने हेतु यूरोपीय देशों (शायद स्विट्जर्लैण्ड भी) से बड़े-बड़े पादरी आये थे। मुंबई से एक उग्र विचार रखने वाला वामपंथी कार्यकर्ता महाविद्यालय में आया हुआ था। वह भी मुझे व मेरे मित्रों से खूब चर्चा करता रहता। यही समय था जब मेरा विद्यार्थी परिषद के कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओं से संपर्क आया, जिनसे लगातार चर्चा होती रहती थी। इस निमित्त क्रिश्चियन मिशनरी, यूरोप का इतिहास व आज की स्थितियाँ, कार्ल मार्क्स व नक्सली चिंतन तथा भारत में उनकी योजनाएँ आदि विषयों पर काफी कुछ पढ़ने व समझने का मौका मिला। साथ ही 11 वी कक्षा में अतिरिक्त समय भी काफी था, उसका बहुत अच्छा उपयोग हो रहा था। विवेकानंद, संघ एवं अभाविप विचार इनको भी समझने का अवसर मेरे पास था।

वर्ष के अंत तक मेरा यह दृढ़ मत बना कि स्वामी विवेकानंद के विचार व कार्य का प्रचार ही हमारे युवाओं को सही दिशा में ले जाने में सक्षम है। इसलिए मैंने निश्चय किया कि 12 जनवरी 1984 को युवा दिवस अपने महाविद्यालय में भी मनाया जाए। उन दिनों महाविद्यालय के प्राचार्य एक एँग्लोइंडियन प्रो. डॉ. विल्किन्सन थे। मैं उनके पास कार्यक्रम हेतु कक्ष उपलब्ध करवाने की अनुमति प्राप्त करने के लिये उपस्थित हुआ। उन्होंने मेरी पूरी बात सुनी और कहने लगे, कि तुम तो जानते हो कि यह क्रिश्चियन

सोसायटी का महाविद्यालय है, यहाँ हिंदू संत विवेकानंद का कार्यक्रम कैसे संभव है? मैने भी बिना कुछ सोचे तुरंत जबाव दिया "जब यहाँ अंग्रेजों का राज था, उस समय क्रिश्चियनों के देश में, उनके द्वारा आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में स्वयं विवेकानंद वैचारिक दिग्विजय कर सकते है, तो आज स्वाधीन हिन्दुस्तान के एक क्रिश्चियन सोसायटी के महाविद्यालय में उनकी जयंती क्यों नहीं मनायी जा सकती? मेरा जबाब काम कर गया व अनुमति मिल गयी।

बस, तभी से मेरा जुड़ाव विवेकानंद के विचार एवं अभाविप के साथ बढ़ता ही गया। 1993 में उनके शिकागो भाषण की शताब्दी भी मनायी गयी। आज पूरा देश स्वामी विवेकानंद की 150 वी जयंती (सार्धशती) को मना रहा है। सार्धशती निमित्त कई कार्यक्रम हो रहे हैं, पूरा देश स्वामी विवेकानंद के प्रेरक जीवन एवं विचारों को स्मरण कर रहा है। परिस्थितियों से अप्रभावित विवेकानंद के सुस्पष्ट विचार एवं मार्गदर्शन का साक्षात्कार हम उनके विचारों में करते हैं। अल्प आयु में उनका पराक्रम अतुलनीय है। उनका व्यक्तित्व एवं विचार तथा भारत के भविष्य के संदर्भ में उनकी दृष्टि यह आज के युवाओं के समक्ष नये संदर्भ में लाना अत्यंत आवश्यक है।

उपरोक्त उद्देश्य को ध्यान में रखकर लिखी गयी यह पुस्तक उन विचारों को समझने का एक प्रयास है। आशा है, यह प्रयास सभी के लिये सार्थक सिद्ध होगा।

29 मई 2013

- सुनील आम्बेकर

भारत पुनरूत्थान के शिल्पकार

स्वामी विवेकानंद

बिले से वीरेश्वर, नरेन्द्र से विविदिशानन्द व अंत में जगप्रसिद्ध स्वामी विवेकानंद यह उनकी यात्रा भारत माँ के चरणों में समर्पण की प्रेरक गाथा है। उनका पूरा जीवन सत्य की खोज में नचिकेता जैसा लगता है, तो गुरुभक्ति का असीम उदाहरण रामकृष्ण-विवेकानंद के संबंधों से झलकता है।

गुरुदेव के पश्चात् आज तक सर्वश्रेष्ठ श्रेणी में परिचित रामकृष्ण मठ की सन्यासी परंपरा का प्रारंभ, तत्पश्चात् परिव्राजक जीवन के अपार कष्ट में भारत की पीड़ा दूर करने के भरसक प्रयास स्वामी जी के जीवन में प्रेरणास्पद पहलू है। कन्याकुमारी की शिला पर साधना से जागतिक धर्मसंसद में दिग्विजय का पराक्रम व तत्पश्चात् देशवासियों के पुरूषार्थ को जगाकर भारत के पुनरुत्थान के सूत्रपात जैसे महान कार्य उनके जीवन का हिस्सा है। एक तुफान की तरह आये इस महापुरूष ने पिढ़ीयों का कार्य अपनी अल्प आयु में एक अवतार पुरूष की गति से किया है। आज भी वह भारत के पुनरुत्थान के शिल्पकार के साथ ऊर्जास्रोत का कार्य पूर्ण गति से कर रहे हैं। उनके जीवन को गहराई से समझना व उनके ही कार्य को पूरा करने हेतु सक्रिय होना यही प्रयास.....

विवेकानंद का समुद्रलंघन

जिस प्रकार वीर हनुमान भगवान राम के कार्य हेतु सीता की खोज में समुद्र को लांघकर सीधे रावण की लंका में पहुँच गये थे। वैसे ही विवेकानंद ने भारत के स्वाभिमान का चीरहरण करने वाले यूरोप-अमेरिका के विश्व धर्मसम्मेलन में हमारे लिए अतिशय कष्टप्रद समुद्र यात्रा की तथा सीधे शिकागो पहुँचे थे। उन्होंने वहाँ की धर्मसभा में अपने ज्ञान व वीरता का परिचय देकर भारत के स्वाभिमान का परचम लहराया था, सिंहगर्जना की थी।

विवेकानंद ने परिव्राजक के रूप मे देशभर मे भ्रमण करते हुए काफी कठिनाईयों का सामना किया था। लेकिन उनका मन अपनी सुविधाओं के लिये नही अपितु देश के आम गरीबों हेतु सुविधायें जुटाने के लिए तड़प रहा था। एक तरफ देश को पराधीनता से मुक्त कराना, गरीबों के जीवन को सुधारना तथा भारत को भौतिक दृष्टी से संपन्न बनते देखना, वही दुसरी ओर आध्यात्मिक संपन्नता में भारत को अग्रसर बनाने का संकल्प उनके मन में था। यह संकल्प उनकी वाणी, कृती, योजनाएँ आदि में स्पष्ट रूप से नित्य देखने को मिलता है।

विवेकानंद उन महानायकों की श्रेणी में है, जिन्होंने अपने पराक्रम से इतिहास बनाया। भगवान राम ने धर्म स्थापना हेतु वनवास के माध्यम से समस्त देशवासियों को जागृत किया तथा अपने राज्य से बाहर केवल सत्य व धर्म के आधार पर सेना का गठन किया। भगवान कृष्ण ने अपना पूरा जीवन "धर्म संस्थापनार्थाय"लगाया। समर्थ रामदास ने इसी हेतु पूरा जागरण किया, तो शिवाजी ने निराश प्रजा के स्वाभिमान को जागृत कर सेना व राज्य दोनों का निर्माण किया। चाणक्य ने शून्य से चंद्रगुप्त की सेना तैयार कर भारत को आक्रमण से बचाया। 1857 की लडाई भी सामान्य सैनिकों का महाप्रयास था। विवेकानंद ने भी अपनी परिव्राजक यात्रा से जागरण किया तथा शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन (1893) के अपने पराक्रम से नए स्वाधीनता सेनानीयों तथा गरीबों के सेवकों की नई फौज का निर्माण किया। यह लोग समग्र तथा व्यापक ज्ञान के आधार पर विचारपूर्वक यह कार्य करने हेतु तत्पर हुए थे। यही कारण है कि ऐसे विवेकानंद का भारत वर्ष पर काफी प्रभाव पडा तथा उनका कार्य युगप्रवर्तक बन गया।

मैं कुछ दिनों पूर्व एक प्रबंधन (MBA) महाविद्यालय में गया था, वहाँ कुछ छात्र थोडे अहंकार मे थे। उन्होंने कहा कि विवेकानंद पुराने जमाने की बातें हो गयी। मैंने तत्काल कहा, कि आप सब मिलकर जितने देशों की यात्रा नही कर सकते, विवेकानंद उस समय विश्व के उससे अधिक देशों की यात्रा कर चुके थे। तुम सब वीजा (Visa) की कतार में खड़े दिखोगे, लेकिन विवेकानंद अतिथि बनकर उन देशो में घूमकर आये।

यह सब उस समय हुआ था जब भारत में अंग्रेजों का शासन था तथा सभी लोग उनके शासन से भयभीत और पश्चिम की चकाचौंध से प्रभावित थे।

विवेकानंद अंग्रेजी विद्या विभूषित थे, फर्राटेदार प्रभावी अंग्रेजी बोलते थे लेकिन अंग्रेजों से प्रभावित नही थे। वे भारत की ज्ञान, संस्कृती से प्रभावित तथा गौरवपूर्ण इतिहास के स्मरणों से ओतप्रोत थे। अंग्रेजी राज के उनके जमाने में जहाँ पढ़े-लिखे कोलकाता जैसे शहरों के युवा अंग्रेजों के भक्त थे, वहीं विवेकानंद के प्रभाव से कई अंग्रेज तथा यूरोप-अमरिका के लोग उनके भक्त एवं शिष्य बने थे। उनकी इन्ही विशेषताओं ने उन्हे अपने जमाने में युवाओं के समक्ष एक "बहादुर नायक" के रूप में प्रस्तुत किया। उनका यह कर्तृत्व वर्तमान समय में भी युवाओं के लिए आकर्षण का केंद्र है।

विवेकानंद के शिकागो में हुए "दिग्विजयी उद्‌बोधन" की पृष्ठभूमी

विवेकानंद जब 11 सितंबर 1893 में शिकागो के जागतिक धर्मसंसद में उद्‌बोधन के लिए खड़े हुए तो उन्होने कहा "अमेरिकन बहनों एवं भाईयों" (Sisters & Brothers of America) तो सात हजार से अधिक संख्या में भरा हुआ सारा सभागार तालियों से गूंज उठा तथा सभा में उपस्थित नागरिक उनके सम्मान में खड़े हो गये।

ऐसा क्या हुआ? यह कोई जादू का खेल या मोहित करने का मंत्र नहीं था। यह स्वामी विवेकानंद की कठोर साधना थी जिसके कारण उनके शब्दों ने पूरी सभा को झकझोर दिया था।

उन दिनों पूरे पश्चिम जगत में छोटी-छोटी अस्मिताओं तथा पहचान पर बने राष्ट्र या राष्ट्र समूह आपसी स्पर्धा कर रहे थे। धर्म के नाम पर चर्च की मनमानी तथा आपसी वर्चस्व की लडाईयों को लोग अनुभव कर रहे थे। सार्वजनिक जीवन के अनुशासन तथा व्यक्तिगत जीवन में संपन्नता के होते हुए भी गहरे रिश्तो का अभाव उनके अनुभव में था। दूसरी तरफ लगातार झूठे प्रचार के चलते भारत के संदर्भ में बहुतायत गलत धारणायें भी थी, जैसे वहां अभाव तथा अत्यंत पिछड़ापन है। अर्थात अंग्रेजो

तथा मिशनरीयों ने लगातार यह प्रचारित किया था कि भारत के लोगों के पास धर्म का ज्ञान, व्यावहारिक शिक्षा तथा व्यापार की प्रवृत्ती का पूर्णत: अभाव है। इसलिए वह लोग स्वयं राज्य चलाने योग्य नही है, अत: अंग्रेजी शासन भारतीयों के उत्थान के लिए है। ज्ञान व शिक्षा व्यवस्था के अभाव को दूर करने हेतु पश्चिम की शिक्षा की उन्हे जरूरत है तथा धार्मिक व्यवस्था व ज्ञान को स्थापित करते हुए मुक्ति देने हेतु मिशनरीयों को भेजना अत्यंत पवित्र कार्य है। ऐसी स्थितियों में मिशनरीयों के मन में भारतीयों के प्रति दया का भाव हो सकता है परन्तु आदर का भाव होने की संभावना बहुत कम दिखती है। इस पृष्ठभुमि में ऐसे गुलाम, पिछड़े, गरीब देश से आए हुए प्रतिनिधि विवेकानंद ने जब पूरे आत्मविश्वास से, जहाँ रिश्ते कमजोर पड गये है ऐसी सभा में "अमरिकन बहनों एवं भाईयों" कहा तो इस संबोधन ने उन्हे झकझोर दिया।

विवेकानंद ने यह शब्द औपचारिक उदबोधन के रूप मे नहीं कहे थे। जिस प्रकार उनके गुरु समस्त सृष्टी में आत्मीय भाव का अनुभव करते थे, तथा उसी भाव को स्थापित करना उनका उद्देश्य था। रामकृष्ण परमहंस जैसे गुरु से भारतीय परंपरा के समस्त ज्ञान के समुद्र को विवेकानंद पी गये थे। गुरुदेव के पास वह अपनी समस्त पारिवारिक समस्याओं के होते हुए भी उस दर्द के घूट को पी कर आए थे।

उनके गुरुदेव ने समस्त सृष्टी से एकत्व का अनुभव उन्हे दिया था। मनुष्यों के परस्पर संबंधों की गहराई को वह अंतर्मन से समझते थे। गुरूदेव ने दुनिया के सभी संप्रदायों की शिक्षा को ग्रहण कर उनकी सार्थकता को समझा था तथा इसी अवसर विभिन्न मार्गो से उसी एक परमात्मा तक पहुँचने का अनुभव किया था।

विवेकानंद ने देश के गरीबों की पीड़ा को स्वयं उनके बीच जीते हुए अनुभव किया था, उन अपरिचित लोगों से अपनेपन को स्वयं के मन की तड़प से प्रत्यक्ष समझा था। वह वास्तव में भारत के ज्ञान से भरा हुआ ऐसा अमृत कुंभ लेकर आए थे, जो दुनिया के दहकते करोंड़ों मनों को शांति व आनंद का अनुभव दे सके। ऐसे ओतप्रोत भाव से जब भारत के इस संन्यासी ने करोड़ों भारतीयों की ओर से, युगों के आध्यात्मिक ज्ञान

के आधार पर सच्चे मन से उस सभा में "बहनों एवं भाईयों" कहा, तो वह संबोधन इतना शक्तिमान, इतना आत्मीय था, कि बरसों से राह देख रहे वहाँ उपस्थित मनों पर बिलकुल किसी अपनों की तरह छा गया। विवेकानंद के एक-एक शब्द उस सभागार से बाहर पूरे पश्चिम जगत में लोगों के शरीर मन, बुद्धि में स्पंदन पैदा कर रहे थे, उनकी आत्मिक अनुभूती जागृत हो रही थी।

विवेकानंद का यही विश्वविजय अभियान था। यह किसी भारतीय द्वारा प्रस्तुत किये गये क्षमता से भरे वह शब्द थे, जो शांतीपूर्ण तरीके से परिवर्तन अर्थात "क्रांती" कर रहे थे। पूरी दुनिया की सोच पर इसका गहरा प्रभाव पडा। दुनिया के उस समय के लगभग सभी विचारशील एवं प्रभावी लोगों पर उन्होंने अपने प्रभाव छोडा। भारत के गहरे चिंतन एवं ज्ञान के भंडार का नई शताब्दी में पुन: आभास पूरी दुनिया को कराने में वे सफल रहे। पुरी दुनिया को भारत के प्रति सोच बदलने के लिए उन्होंने मजबूर किया।

इसका भारत में भी बहुत गहरा प्रभाव पडा। किसी ने उनसे पुछा "भारत में अनपढ़ लोग है, और आप तो सारी बातें यहाँ अंग्रेजी मे करते है। आपको भारत के करोड़ों लोग कैसे समझेंगे? इंग्लेंड में अपने एक भाषण "मेरे गुरूदेव" में वह कहते है कि जैसे चिटीयों को शक्कर को ढूँढने के लिए पढाई की जरूरत नहीं, वैसे ही भारतीयो को किसी आध्यात्मिक शक्ति के उदय को ढूँढने की अपार शक्ति निसर्गदत है, इसलिए मेरे इस कार्य को वह जरूर समझेंगे"

इसलिए जब विवेकानंद शिकागों में दिग्विजय कर रहे थे, तब यह समस्त गुलामी व गरीबी की मार झेल रहे करोड़ों भारतीयों के लिए शुभ समाचार था, उनके उत्थान का। साथ ही उन भारतीय युवाओं की मुख पर जोरदार थप्पड था जो अंग्रेजों की प्रशंसा में लीन होकर हर भारतीय बात को पिछड़ा व अनुपयोगी मानकर उसकी उपेक्षा कर रहे थे। 1857 की मार झेलकर प्रताडित हुए भारतीयों, जो गुलामी को ही भगवान की इच्छा मानकर अंग्रेजो से भीख में कुछ रियायतें मांगते हुए घूम रहे थे, उनके लिए यह घटनाक्रम पुन: स्वाभिमान से जीने की ललक उत्पन्न कर गया। यह ललक ही थी, जो

अंग्रेजो से लडते हुए गुलामी से मुक्त होकर भारत माँ को पुन: सम्मानित करने हेतु हर विश्वविद्यालयों में पढ रहे छात्रों को स्वाधीनता आंदोलन के लिए पुन: प्रेरित कर रही थी। परिमाणस्वरूप 1893 के पश्चात हुए सभी प्रकार के स्वाधीनता आंदोलन को सर्वाधिक प्रेरित करने वाले विवेकानंद ही थे।

विवेकानंद की इस विश्वविजय के परिणामस्वरूप भारत में देशाभिमान एवं भारत भक्ति की जबर्दस्त लहर उठी। विवेकानंद जब भारत आए तो उनके रथ को वे सारे तथाकथित अंग्रेजियत से प्रभावित युवा सर्वाधिक संख्या में खींच रहे थे। विवेकानंद के विचार उस समय जितने प्रभावी, आधुनिक एवं प्रासंगिक थे, उतने ही या उससे अधिक वर्तमान समय में प्रासंगिक, प्रेरक तथा उपयोगी है।

स्वामी विवेकानंद ऐसा व्यक्तित्व है, जो आज की पीढ़ी को सही दिशा में ले जा सकते है। वह स्वामी जी ही हैं, जो युवाओं के मन पर तुरंत अधिकार बना लेते है, उनकी सोच को बदल देते है, तथा उन्हे कार्य हेतु सक्रिय कर सकते है।

विवेकानंद का पूरा जीवन युवा अवस्था के आदर्शवाद का प्रकटीकरण है। उनकी 39 वर्ष की अल्प आयु में वह युगों-युगों का कार्य करके चले गये। उन्होंने जन्म से मृत्यू तक सामान्य जीवन की भीषण पीड़ाओं को झेलते हुए भी असामान्य कार्य का उदाहरण प्रस्तुत किया है। उनका जीवन विचार एवं कार्य के सभी पहलू आज के युवाओं हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण व प्रेरक है।

विवेकानंद का उदय

विवेकानंद के विश्वपटल पर उदय से कई लोगों की भारत विरोधी बहुतायत योजनाएँ विफल हो गयी। मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि विवेकानंद को वैसी सफलता न मिलती तो क्या होता ? आज जिस भारत के महाशक्ति बनने की बात दुनिया में हो रही है, वह दृश्य हम अनुभव न कर पाते। शायद पिछडेपन तथा अज्ञान की खाई में और गहरे चले जाते। लेकिन जैसा कि विवेकानंद ने कहा भारत की नियति धर्म है, वह जब तक यहाँ जीवित है, भारत का जीवन के हर क्षेत्र में उभरकर आना निश्चित है। धर्म

प्राणशक्ति है भारत की, जिसमें विवेकानंद ने जान फूँक दी, यहीं उनका सर्वश्रेष्ठ योगदान है। अंग्रेज अपनी शिक्षा के द्वारा हमारी गौरवपूर्ण स्मृतियों को नष्ट करना चाहते थे, ताकि हम उनके मानसिक गुलाम बने व हमारी आजादी की इच्छा ही समाप्त हो जाए। उनके प्रयासों का प्रभाव आज भी साफ दिखायी देता है। लेकिन विवेकानंद के तुफान ने उनके इस अभियान को काफी हद तक नुकसान पहुँचाया तथा देश में चल रहे, स्वाधीनता आंदोलन तथा राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन को बहुत बल मिला।

भारत में आत्मग्लानि से ग्रस्त हिंदू समाज में भेद डालते हुए अंग्रेजी सत्ता का उपयोग कर मिशनरी व्यापक योजना बनाकर समूचे भारत को धर्मांतरित करने का सपना देख रहे थे। इस हेतु वे भारत में भ्रम फैलाने के साथ-साथ पश्चिमी देशों में भारत के पिछड़ेपन व धर्मग्लानि के अत्यंत भीषण चित्र को प्रस्तुत कर रहे थे। ताकि उन्हे वहाँ से भारी धन प्राप्त हो तथा भारत में व्यापक धर्मांतरण हो। लेकिन विवेकानंद के अमरिका आगमन ने पश्चिमी देशों में चलाये जा रहे उनके भारत विरोधी दुष्प्रचार को मानो उजागर कर दिया तथा लोगों की भारत के प्रति दृष्टी काफी हद तक बदल दी। भारत में भी मिशनरी योजना को भारी धक्का लगा। इसलिए काफी दिनों तक कई मिशनरी संस्थाएँ स्वामी विवेकानंद के प्रति दुर्भावना रखकर उनके संदर्भ में दुष्प्रचार करती रही। किन्तु विवेकानंद जैसे व्यक्तित्व पर ऐसे प्रचारों का प्रभाव संभव नहीं हो पाया।

नया पंथ नहीं

स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व का प्रभाव पर्याप्त व्यापक था वे एक नया विश्वव्यापी संप्रदाय प्रारंभ कर सकते थे। लेकिन उन्होंने नये संप्रदाय के बदले अपने सनातन ज्ञान की पताका लहराते हुए सभी धर्मों / पंथो के सह अस्तित्व की बात उठायी। अपने गुरुदेव के आदेशानुसार दुनिया मे शांति स्थापना के लिए सभी संप्रदायों को एक दुसरे को मानने का आग्रह प्रतिपादीत किया।

"भारत पुनरुत्थान" का सपना

विवेकानंद अपनी आध्यात्मिक साधना में अपने गुरू की कृपा से सर्वोच्च "निर्विकल्प समाधि" तक पहुँच चुके थे। जहाँ से व्यक्ति इस व्यवहारिक जीवन से मुक्त होकर परम आनंद का अनुभव करता है। वे आध्यात्मिक साधना हेतु अपना घर छोडकर आये थे। लेकिन यहाँ साधना से प्राप्त सर्वोच्च स्थान को गुरू के आशीर्वाद से त्यागकर वह सामान्य देशवासीयों के दु:ख दर्द को मलहम लगाने हेतु निकल पड़े। भारत माँ को पुन: सम्मान दिलाने एवं भारत के ज्ञान को पुनर्स्थापित करते हेतु उन्होंने स्वयं को एक युगप्रवर्तक अभियान में झोंक दिया।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि - निराश हिंदू जाति के लिए विवेकानंद संजीवनी औषधी जैसे थे। स्वामी विवेकानंद पर विस्तार से टिप्पणी (1949) करते हुए वे कहते है कि .....

"प्राचीन भारत में पले और भारतीय परम्परा के गर्व से परिपूर्ण, विवेकानन्द का जीवन की समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण अत्याधुनिक था। प्राचीन और वर्तमान भारत के बीच वे एक सेतु के समान थे। उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली था, गम्भीरता और आत्मसम्मान उनमें भरा हुआ था, अपने तथा अपने कार्य के प्रति उनमें श्रद्धा थी और साथ ही वे क्रियाशीलता और अदम्य शक्ति से ओतप्रोत थे। भारत को आगे बढ़ाने की उनमें तीव्र उत्कण्ठा थी। हताश और निरूत्साहित हिन्दू मानस के लिए वे एक संजीवनी औषधि के रूप मे आए। उन्होंने हमें आत्मविश्वास प्रदान किया और प्राचीन धारा से जुड़ने के कुछ सूत्र दिये।

मुझे पता नहीं कि आज की युवा पीढ़ी में से कितने लोग स्वामी विवेकानंद के लेख तथा व्याख्यान पढ़ते हैं, पर मैं अपने काल की बात कह सकता हूँ। मेरी पीढ़ी के अनेक युवक उनसे अत्यधिक प्रभावित हुए थे और मेरा विचार है कि वर्तमान पीढ़ी भी यदि स्वामीजी के व्याख्यान और उनकी रचनाओं का अनुशीलन करे, तो उसका बडा उपकार होगा, वे काफी कुछ सीख सकेंगे। स्वामीजी की वाणी थोथे शब्द मात्र न थे,

बल्कि उनमें उनके मन-प्राण में प्रज्वलित होने वाली उस अग्नि की झलक मिल जाती है, उनकी वाग्मिता और जीवनदायी भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त होने वाली उस ज्वाला के दर्शन होते है, जिसने अत्य अल्प आयु में ही उन्हें स्वाहा कर दिया था। अपने सुख से उच्चारित होने वाले शब्दों में उन्होंने अपनी अन्तरात्मा उडेल दी और इसी कारण वे एक महान वक्ता हो गए थे। उन्होंने वाक्चातुर्य की चमक-दमक तथा अलंकरण का नहीं, बल्कि गहन श्रद्धा और आत्मा में आस्था का आश्रय लिया था, इसलिए भारत में बहुसंख्य लोगों पर उन्होने काफी गहरा प्रभाव डाला और इसमें सन्देह नहीं कि युवक और युवतियों की दो-तीन पीढियाँ उनसे प्रभावित होती रही है।....

यदि आप स्वामी विवेकानंद की रचनाएँ और व्याख्यान पढ़ें, तो उनमें आप एक अद्‌भुत बात देखेंगे कि वे कभी पुरानी प्रतीत नहीं होती। ये बातें 100 से अधिक वर्ष पूर्व कही गयी थीं, पर आज भी वैसी ही तरोताजा हैं, क्योंकि उन्होंने जो कुछ भी लिखा या कहा वह हमारी अथवा विश्व समस्याओं के मूलभूत तत्त्वों तथा पहलुओं से सम्बन्धित था। यही कारण है कि आज भी उनके विचार पुराने नहीं लगते। आज भी यदि आप उन्हे पढें, तो वे नये ही प्रतीत होंगे।

सुभाषचंद्र बोस स्वामी जी के बारे में लिखते है -

"स्वामी विवेकानंद के बहुमुखी प्रतिभा की व्याख्या करना बड़ा कठिन है। मेरे समय का छात्र-समुदाय स्वामीजी की रचनाओं और व्याख्यानों से जैसा प्रभावित होता था, वैसा और किसी से भी नहीं होता था। वे मानो उनकी (छात्रों)आशाओं -आकांक्षाओं को पूर्णरूप से अभिव्यक्त करते थे। परन्तु स्वामीजी का यथार्थ मूल्यांकन करने के लिए उन्हें परमहंसदेव के साथ मिलाकर देखना होगा। वर्तमान स्वाधीनता आन्दोलन की नींव स्वामीजी की वाणी पर ही आश्रित है। स्वामीजी ने प्राच्य तथा पाश्चात्य धर्म तथा विज्ञान और अतीत एवं वर्तमान के बीच समन्वय साधित किया; वे इसी कारण महान् हैं। उनकी शिक्षाओं में हमारे देशवासी अभूतपूर्व आत्म सम्मान, आत्म विश्वास और आत्म प्रतिष्ठा का बोध कर रहे हैं।

रामकृष्ण परमहंस ने अपनी साधना के द्वारा जो सर्व-धर्म-समन्वय कर दिखाया था, वही स्वामीजी के जीवन का मूलमंत्र बना और वही भावी भारत के मूलमंत्र का भी आधार हुआ। इस सर्व-धर्म-समन्वय और सभी मतों में सहिष्णुता के बिना हमारे इस विविधतापूर्ण देश में राष्ट्रीयता का बोध स्थापित नहीं हो सकता।....

राममोहन राय के युग से विभिन्न आन्दोलनों के जरिये भारत की मुक्ति-कामना धीरे-धीरे प्रकट हुई। यह आकांक्षा उन्नीसवीं शताब्दी के चिन्तन तथा सामाजिक सुधारों में दिख पडी थी, परन्तु यह राजनैतिक क्षेत्र में कभी प्रकट नहीं हुई। इसका कारण यह था कि तब भी भारतवासी पराधीनता की मोहनिद्रा में डूबे हुए थे और सोचते थे कि अंग्रेजों का भारत-विजय एक दैवी वरदान है। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में और बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में स्वाधीनता के अखण्ड रूप का आभास रामकृष्ण-विवेकानंद के माध्यम से झलकता है। "Freedom is the song of the soul" - स्वाधीनता हमारी आत्मा का संगीत है। "यह सन्देश जब स्वामी जी के हृदय से निकला, तब उन्होंने समग्र देशवासियों को मुग्ध और उन्मत्त कर दिया। उनकी साधना के द्वारा, आचरण के द्वारा, वचनों और भाषणों के द्वारा यह सत्य प्रकट हुआ।"

ऐसे अनेकों महापुरुषों ने विवेकानंद को स्पष्ट रूप से राष्ट्र के महानायक के रूप में प्रस्तुत किया है।

विवेकानंद के विश्वपटल पर उद्‌भव ने भारत के पुनः अपने आत्मविश्वास एवं संस्कृति के आधार पर दुनिया से संबंधो का पुनः आरंभ किया। संप्रदायो, राष्ट्रों, विचार तथा मत-प्रवाहों के संघर्ष को टालकर परस्पर पूरक होना ही मानव जाति के हित में है तथा यह संभव है। यह संदेश विश्वगुरू के अपने अधिकार से पुनः भारत का पुत्र विवेकानंद उद्‌घोष कर रहा था। हम भारत के लोग विवेकानंद के विचारों या दिशा-निर्देशों का पालन करने में देरी कर सकते हैं लेकिन कभी भी टाल नहीं पायेंगे। देर-सवेर पूरी तरह उनके दिखाए रास्ते पर हमें चलना ही होगा।

पूरब- पश्चिम का आदान-प्रदान

मैं कभी सोचता हूँ , तो लगता है कि भारत अगर मुगलों एवं अंग्रेजों की गुलामी के विरुद्ध संघर्ष में व्यस्त न रहता, तो शायद मानव जाति के लिए काफी सुखद पर्याय लेकर आता। हिंदू समाज में यह प्रक्रिया लगातार रही कि अपनी समीक्षा करते हुए अच्छे को रखे व कुप्रथाएँ तथा गलत मान्यताओं को नकार कर अपने ज्ञान व जीवन को और उन्नत बनाए। लेकिन जिसका सबकुछ लुटने लगे वह समीक्षा नही कर पाता, और सही-गलत जो अपना है, उसे किसी तरह बचाने में लग जाता है। क्योंकि वह उसका अपना है। कुछ समय पश्चात सही-गलत का भेद भूलकर गलत का भी समर्थन करता है। यही बात हमारे साथ हुई थी, जिसके कारण समाज में कई सारे दोष उत्पन्न हुये थे।

विवेकानंद से पहले अधिकतम समाज सुधारकों ने इस दुर्दशा के लिये हमारे धर्मज्ञान एवं परंपराओं पर दोषारोपण करते हुये उन्हे पुरी तरह नकारने का दिशा निर्देश दिया । परिणामस्वरूप अपना सबकुछ निरर्थक है तथा जो भी पश्चिम का है वह सब कुछ सार्थक है, यह भ्रम व्यापक रूप मे और विशेषकर पढ़ी-लिखी पीढ़ी मे फैल गया था। जो परंपराओं को मानते थे वह गलत बातों को भी धर्म का निर्देश बताकर समर्थन कर रहे थे तथा पश्चिम की हर बात को गलत बताकर भारत में उत्पन्न हर गलत बातों या कमियों के लिये विदेशीयों को कोस रहे थे। ऐसे दौर मे विवेकानंद ने उद्‌घोष किया कि भारत में उत्पन्न कमियों या कुप्रथाओं तथा गरीबी और गुलामी के लिये हमारा हिंदू धर्म या सनातन ज्ञान परंपरा जिम्मेदार नही है। हमे अपनी खुली आँखो से उन्हे समझकर पुनर्व्याख्यायित तथा पुनर्स्थापित करना होगा, तथा उत्पन्न दोषों को तात्कालिक मानकर उनका निर्मूलन करना होगा। भारत ने दुनिया को बहुत कुछ दिया व अभी भी भारत के पास समुचे विश्व के कल्याण हेतु देने लायक बहुत कुछ है। वह कहते थे तुम "अमृतपुत्र" हो। अर्थात वह इस बात को भी पुर्णतः गलत मानते थे कि पश्चिम ही सबकुछ है।

उनका मानना था पूरब-पश्चिम का समन्वय ही समस्त मानव जाति के हित मे है। पश्चिम में सार्वजनीक जीवन का अनुशासन, साफ-सफाई, तकनीकी आदि क्षेत्रों मे

हुयी प्रगती को भारत सहित पूरी दुनिया के हित मे प्रयोग मे लाना होगा। साथ ही भारत का आत्मिक एकता एवं परस्पर संबंधो का ज्ञान देने वाला आध्यात्मिक संदेश प्रत्येक मानव जीव के कल्याण के लिए आवश्यक है। इस संदेश से ही राष्ट्रों, संप्रदायों तथा विभिन्न शाक्तियों के बीच सौहादपुर्ण संबंध से समन्वय स्थापित होकर हिंसक संघर्षों को रोकना संभव है । उनकी मान्यता थी कि इन संघर्षों के अभाव में मानव जाति के लिए प्रगती कर पाना संभव नही हो पायेगा। स्वामी विवेकानंद के संदेश के इतने वर्षो पश्चात भी दोनो की परस्पर निर्भरता ही जीवन का सत्य है तथा उस दिशा में आगें बढ़ना हमारी नियती है ।

दलितों /पिछड़ों को नेतृत्व देने का आव्हान

स्वामी जी अपार ज्ञान की परंपरा वाले भारत में जन्म के आधार पर पिछडी जाति के लोगों पर हो रहे अन्याय से काफी क्रोधित तथा दु:खी थे। अस्पृश्यता तथा सामाजिक घृणा से समाज के बड़े हिस्से को इस तरह प्रताड़ित करना कतई धर्म आधारित नही था। सर्वत्र भगवान के ज्ञान के विपरित हिन्दू समाज का व्यवहार अत्यंत मूर्खतापूर्ण तथा आत्मघाती था। वह दार्शनिक भाव से कहते थे कि अब ऐसे वंचितो का समय पूरी दुनिया में आ रहा है। भारत में भी इस बुराई को त्याग कर इन्ही वंचितो को ईश्वर का रूप मानकर उन्ही की सेवा करने का समय आया है तथा वह मानते थे कि आज यही सच्चा धर्म एवं हमारा कर्तव्य है। आज इन्ही देवताओं की पूजा से भारत का उत्थान होगा तथा पुराने पापों से हमारी पीढ़ीयो को मुक्ति मिलेगी।

युवाओं पर ही भरोसा

स्वामी विवेकानंद का भारत के युवाओं पर ही भरोसा था। वह कहते थे कि सब कुछ त्याग कर भारत मां की सेवा मे तत्पर युवाओं से ही यह कार्य संभव है। उनका प्रसिद्ध आव्हान है कि केवल एक लाख युवाओं से वह यह कार्य संभव कर देंगे।

वे कहते थे देशभक्त बनो, "जिस राष्ट्र ने अतीत में हमारे लिए इतने बड़े–बड़े काम किए हैं, उसे प्राणों से भी प्यारा समझो। ऐ मेरे भावी सुधारकों, मेरे भावी

देशभक्तों, तुम अनुभव करो, ह्रदय से अनुभव करो। क्या तुम ह्रदय से अनुभव करते हो कि देवों तथा ऋषियों की करोड़ों सन्तानें आज पशुतुल्य हो गयी है? क्या तुम ह्रदय से अनुभव करते हो कि लाखों लोग आज भूखों मर रहे हैं और लाखों लोग शताब्दियों से इसी भाँति भूखों मरते आए हैं? क्या तुम अनुभव करते हो कि अज्ञान के काले बादल ने सारे भारत को ढँक लिया है? क्या तुम यह सब सोचकर बेचैन हो जाते हो? क्या इस भावना ने तुम्हारी निद्रा छीन ली है? क्या यह भावना तुम्हारे रक्त के साथ मिलकर तुम्हारी धमनियों में बहती हैं? क्या वह तुम्हारे ह्रदय के स्पन्दन में मिल गयी है? क्या उसने तुम्हें पागल-सा बना दिया है?... यदि - "हाँ ", तो जानो कि तुमने देशभक्त होने की पहली सीढ़ी पर पैर रखा है। ... माना कि तुम अनुभव करते हो; पर पूछता हूँ, क्या तुमने केवल व्यर्थ की बातों में शक्ति क्षय न करके इस दुर्दशा के निवारण हेतु कोई यथार्थ कर्तव्य-पथ निश्चित किया है? क्या लोगों की भर्त्सना न करके, उनकी सहायता का कोई उपाय सोचा है? क्या स्वदेशवासियों को उनकी इस जीवन्मृत दशा से बाहर निकालने के लिए कोई मार्ग ठीक किया है? क्या उनके दु:खों को कम करने के लिए दो सांत्वनादायक शब्दों को खोजा है? यही दूसरी बात है। ... पर इतने ही से पूरा नही होगा। क्या तुम पर्वताकार विघ्नबाधाओं को लाँघकर कार्य करने के लिए तैयार हो? यदि सारी दुनिया हाथ में नंगी तलवार लेकर तुम्हारे विरोध में खड़ी हो जाए, तो भी क्या तुम जिसे सत्य समझते हो, उसे पूरा करने का साहस करोगे? यदि तुम्हारे अपने साथ छोड़ दे, तो भी क्या तुम उस सत्य में लगे रहोगे? फिर भी क्या तुम उसके पीछे लगे रहकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहोगे। ... क्या तुममें ऐसी दृढ़ता है? बस यही तीसरी बात है। यदि तुम में ये तीन बातें हैं, तो तुम में से हर एक अद्भुत कार्य कर सकता है। तेजस्वी युवकों का एक दल गठित करो और उसे अपनी उत्साह की अग्नि से प्रज्वलित कर दो। क्रमश: इसकी परिधि का विस्तार करते हुए इस संघ को बढ़ाते रहो। मेरा विश्वास युवा पीढ़ी - नयी पीढ़ी में है; मेरे कार्यकर्ता उन्हीं में से आएँगे और वे सिंहों की भाँति सभी समस्याओं के हल निकालेंगे।"

"मेरे वीरहृदय युवकों! ... अन्य किसी बात की जरूरत नहीं, जरूरत है तो केवल प्रेम, निश्छलता और धैर्य की। जीवन का अर्थ ही वृद्धि - विस्तार यानी प्रेम है। अत: प्रेम ही जीवन है, यही जीवन का एकमात्र नियम है; और स्वार्थपरता ही मृत्यू है। सबके लिए तुम्हारे दिल में दर्द हो - गरीब, अनपढ़ तथा दलितों के दु:ख को महसूस करो; तब तक महसूस करो, जब तक कि तुम्हारे हृदय की धड़कन न रूक जाए, मस्तिष्क न चकराने लगे ओर तुम्हें ऐसा प्रतीत होने लगे कि तुम पागल हो जाओंगे - धैर्य रखो। न धन से काम होता है, न नाम से न यश काम आता है, न विद्या, प्रेम से ही सब कुछ होता हैं। चरित्र ही कठिनाइयों की संगीन दीवारें तोड़कर अपना रास्ता बना सकता है। भारत के राष्ट्रीय आदर्श हैं- त्याग और सेवा। आप उसकी इन धाराओं में तीव्रता लाइए और बाकी सब अपने आप ठीक हो जाएगा।"

भारत में आधुनिक राष्ट्रवाद के जनक - स्वामी विवेकानंद

भारत के गौरव का लगातार वर्णन उनके भाषणों में होता था। योगी अरविंद उनके संदर्भ में लिखते है, "स्वामी विवेकानंद का अमरिका जाना और बाद में उनका अनुसरण करने वालों के द्वारा भारत के हित में जो कार्य हुआ, वह सौ लन्दन-कांग्रेसों द्वारा हो सकने वाले कार्य से भी कहीं अधिक था। सहानुभुति जगाने का यही सच्चा उपाय था - अपने को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करना, जिसके पास उसका अपना एक महान इतिहास तथा प्राचीन सभ्यता है, जिनमें अब भी उनके पूर्वजों की प्रतिभा तथा गुण शेष हैं, और जिनके पास अब भी विश्व को देने के लिए कुछ है, इसलिए वे स्वाधीनता के हकदार हैं - इस प्रकार अपना पौरूष तथा योग्यता दिखाकर, न कि भिक्षावृत्ति के द्वारा।"

विवेकानंद की अमरिका व यूरोप में काफी प्रशंसा हो रही थी, जगह-जगह उनका स्वागत हो रहा था लेकिन उनका पूरा मन भारत की मुक्ति के लिए, गरीबों के दर्द को मिटाने के लिए तड़प रहा था। एक तरफ धर्म को पुन: स्थापित करना

उनका लक्ष्य था तो दूसरी तरफ वह तड़प रहे थे, भारत की स्वाधीनता के लिए। 1899 में अमरिकी शिष्य कु. मेरी हिल को लिखे पत्र में वे कहते है कि 1857-58 के ब्रिटीशों द्वारा किये गये जघन्य हत्याकांड तथा उनकी अत्याचारी व्यवस्थाओं के परिणामस्वरूप आये अकालों के बावजूद भारत की जनसंख्या में वृद्धी हुयी है। अर्थात् यह उतनी नही जितनी जनसंख्या मुगल पूर्व काल में थी। आज भी भारत की जनसंख्या के पांच गुना लोगों का पालन-पोषण हो सके इतनी उर्वरा शक्ति इस भारत भूमि में है। जनता के सारे अधिकार एक-एक कर के ब्रिटीश सरकार समाप्त कर रही है। पत्र में आगे लिखते है कि उनके फौजी लगातार हमारे नि:शस्त्र लोगो को मार रहे है। तथा महिलाओं को अपमानित कर रहे है। मेरा यह पत्र तुम प्रकाशित करने मात्र से ही यह ब्रिटीश सरकार मुझे भारत लाकर मार सकती है, ऐसी परिस्थिति में मैं शांत व आशावादी कैसे रहुँ? कैसे मैं शांत चित्त से सो जांऊ?

1890 में मद्रास के प्रोफेसर से बातचीत में उन्होंने कहा , "जब तक भारत स्वाधीनता प्राप्त नही कर लेता , तब तक इस बात की कोई संभावना नही कि अंग्रेज हमारे धर्म की प्रशंसा करे।"

पश्चिम में उनके सभी भाषण वेदांत, हिन्दु धर्म, हिन्दु धर्म की विशेषताएँ तथा अलग-अलग शास्त्रो का संदेश आदि विषयों पर है, लेकिन वहाँ से भेजे गये अधिकतर पत्रों में भारत के लोगो का उत्थान तथा गरीबी से मुक्ति कि योजनाओं पर उनके मन की तड़प है। भारत में अलमोड़ा से कोलंबो तक उनके भाषण में भारत भक्ति का आव्हान है, भारत के पुरूषार्थ को जगाने वाले तथा निराशा त्याग कर स्वाभिमान पूर्वक जीने का आव्हान है। वे कहते है अपने समाज से प्रेम करो व उनके दु:ख दूर करने हेतु स्वयं को झोंक दो, भारत से प्रेम करो, भारत के गरीबों तथा अन्य सभी पिछड़ो को सम्मान दो। विदेशीयों पर निर्भरता समाप्त करो, तथा गुलामी को राष्ट्रीय जीवन से समाप्त करने का सपना वह सभी के समक्ष रख रहे थे।

ढाका में अपने उद्‌बोधन में उन्होंने कहा "उठो जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक रुको मत। स्वयं को पहचानो। आप अमरत्व के पुत्र हो, आपकी प्रगति को रोकने वाला कोई नही है। आप विदेशीयों की गुलामी से मुक्त होकर एक शिष्य के रूप मे उठोगे तथा विश्वगुरू बनोगे। जरूरत है आपके आत्म विश्वास की।"

उनके ऐसे विचार उनकी तड़प को उजागर करते थे। उनके व्यक्तित्व के प्रभाव से कई सारे आंदोलनों को बल मिला। कई लोगों ने राष्ट्र के प्रति स्वयं को समर्पित किया। यह सारी प्रक्रिया स्वाधीनता आंदोलन के नये दौर का सूत्रपात था। क्रांतीकारियों के आदर्श तथा सुभाषचंद के गुरु हेमचंद्र घोष ने 19 वर्ष की उम्र में 1901 में ढाका में स्वामी विवेकानंद का आशीर्वाद पाया। वे लिखते है कि उनकी प्रेरणा के मंत्र में तीन शब्द थे - भारत माता, वंदे मातरम व स्वामी विवेकानंद। वह लिखते है कि स्वामीजी ने उन्हे कहा कि राजनैतिक स्वाधीनता हमारी प्राथमिक आवश्यकता है। ब्रिटीशों को यहाँ राज करने का क्या अधिकार है? उन्हे इंग्लैंड वापस जाना होगा। यह हमारी मातृभूमि है। इसीलिए विपिनचंद्र पाल ने विवेकानंद के बारें में लिखा, "वह वास्तव में भारतीय राष्ट्रवाद के महान उपदेशक व प्रेषित थे।"

भारत की स्वाधीनता - दुनिया के हित में

स्वामी जितात्मानंद अपने लेख (13-14 मई 2000) मे लिखते हैं, क्यों भारत की स्वाधीनता के लिए विवेकानंद इतने व्याकूल थे, क्योंकि एक प्रेषित की भूमिका में वह देख रहे थे, भारत को ऐतिहासिक भूमिका निभानी होगी। भौतिकवादी सभ्यता के अनुगामियों के भविष्य को बचाना, वेदांत का संदेश प्रसारित करते हुए, जीवन में दैवीगुण की आवश्यकता को समझाना तथा सभी मत संप्रदायों की एकता जैसे कई महत्वपूर्ण कार्य; इस हेतु भारत का स्वाधीन होकर विश्वगुरू के रूप में उभरना जरूरी है। वह उद्‌घोषणा करते है "भारत जीवित है तो कौन मरेगा, और भारत मरेगा तो कौन जियेगा?

विश्व ऐक्य का संदेश

1897 में ही विवेकानंद ने बढते आपसी संघर्ष को देखते हुए विश्व-एकता सूत्र के रूप में परस्पर स्नेह की बात की थी। बढती कठिनाईयों को देखकर उन्होने कहा था, "Harmony of Nations" "सामंजस्य देशों का"। आज भी उनकी वह दृष्टि दुनिया में शांति बहाल करेगी व संपूर्ण मानव जाति के लिए उत्थान का मार्ग दिखायेगी। उन्होंने कहा, "जैसे दुनिया आगे बढ़ रही है जीवन के प्रश्न रोज और गहन व व्यापक होते जा रहे है। इस दुनिया में एक अणु भी पूरी दुनिया को अपने साथ ले चलता है, तभी आगे बढ़ पाता है। आगे यह और स्पष्ट हो रहा है कि अब हमारे समाधान केवल अपनी जातियों, राष्ट्रीय या अन्य छोटे-मोटे आधारों पर संभव नहीं। हमारा दायरा विश्वव्यापी होकर संपूर्ण मानव जाति को शामिल कर लेगा, तभी समाधान संभव होगा। भविष्य मे राजनैतिक, सामाजिक आदि समस्याओं पर समाधान हेतु अंतर्राष्ट्रीय संगठन, समूह, कानून आदि समय की मांग है। भविष्य में विश्वयुद्ध के पश्चात संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNO) जैसे कई प्रयास प्रारंभ हुए। आज भी वैश्वीकरण के दौर में शांतीपूर्ण, न्यायपूर्ण, विकासशील तथा मानवीय संबंधों पर आधारित व्यवस्था हेतु परस्पर स्नेह का आध्यात्मिक संदेश देने का दायित्व भारत ही निभा सकता है। इस वैश्विक दायित्व को निभाने एवं "वसुधैव कुटुंबकम" का संदेश पहुंचाने हेतु हमे स्वामी विवेकानंद के कार्य एवं विचार को समझना बेहद जरूरी है।

सभ्यता एवं संस्कृति

प्रत्येक समूह अपने जाति /समूदाय की सब प्रकार से भौतिक प्रगती करना चाहता है। मौका मिलते ही वह अपना रहन-सहन, समृद्धी, खान-पान, शास्त्र-शस्त्र, सेनायें सबकुछ उन्नत करने हेतु प्रयास करता है। अपने पहचान के चिन्हो को, परंपराओं को सभ्यता के रूप में बड़े महत्व से स्थापित करता है। यही सभ्यता का विकास है। और जीवन का सत्य-सभी में एक तत्व का भाव जानकर परस्पर स्नेह के संबंधों को आधार बनाकर जीवन यापन की पद्धति संस्कृति है। सभ्यतायें अलग-अलग हो सकती है, परंतु अगर सभी में ईश्वरत्व देखने की वैश्विक संस्कृति का विस्मरण हुआ, तो सभ्यतायें

बर्बर तरीके से दुसरी सभ्यताओं पर वर्चस्व स्थापित करने निकलती है। स्थापित सभ्यतायें विविधता को शत्रू या चुनौती मानकर उसे नष्ट करने पर तुल जाती है। इसके परिणामस्वरुप संघर्ष शुरु हो जाता है, जिसका अनुभव दुनिया ने कई बार किया है। भारत ने भी अपनी सभ्यता का विकास किया लेकिन सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के साथ, इसलिए वह विश्वगुरू बना। कई सभ्यतायें विश्व पटल पर उभरी व समाप्त हो गयी, लेकिन भारत टिका रहा अपनी संस्कृति के बल पर, आज भी भारत को उसी बल पर खड़ा होना है और अपनी सभ्यता का भी विकास करना है। ऐसा भारत पूरे विश्व के लिए उदाहरण बनेगा, जिसकी दुनिया को नितांत आवश्यकता है।

कट्टरता या उन्मादी प्रवृत्ती को मिटाना होगा

संप्रदायों का सामंजस्य (Harmony of Religions) के संदर्भ में विवेकानंद कहते है, "सभ्यताओं के मुक्ति का मार्ग संप्रदायों के सामजंस्य की कल्पना में, वैश्विक सहिष्णूता तथा वैश्विक परस्पर स्वीकार्यता में है। इन कल्पनाओं के बिना कोई सभ्यता जीवित रह नहीं पायेगी। जब तक कट्टरता या उन्मादी प्रवृत्ती, रक्तपात व क्रुरता नहीं रूकेगी, किसी सभ्यता का विकसित होना संभव नही है।"

विवेकानंद ने साफ शब्दों मे कहा था, "क्या भगवान की पुस्तक समाप्त हो गयी? या और कई सारी बाते शेष है? बाइबल, वेद, कुरान अच्छी पवित्र पुस्तके है, लेकिन अभी कई पृष्ठ आना शेष है। हम वर्तमान में है, लेकीन भविष्य के लिए हमे स्वागतशील रहना होगा। हम भूतकाल से बोध लेंगे, आज प्रकाश का आनंद लेंगे और अपने हृदय की खिडकियाँ भविष्य के लिए खुली रखेंगे। मै उन सभी प्रेषितों जो भूतकाल में हुए, वर्तमान में जिवित है तथा भविष्य मे आनेवाले है, सभी को प्रणाम करता हूँ।" इसका अर्थ साफ था की आध्यात्मिकता की यात्रा अनंत है, इसे कट्टरता के दायरे में बांधना निरर्थक है।

प्रसिद्ध विचारक अरनॉल्ड टॉनबी (1969) ने कहा "हम दुनिया के इतिहास के संक्रमण युग में जी रहे है। जिसका प्रथम पाठ पश्चिम ने प्रारंभ किया उसका अंतिम

पाठ भारतीय होने की जरुरत है, अगर मानवजाति को आत्मघाती दिशा में न जाना हो। पश्चिम ने विश्व को भौतिक आधार पर जोड दिया है लेकिन जब विश्व के अलग-अलग लोगों ने एक दुसरे से प्यार अभी सीखा ही नहीं, तब सभी लोगों को सशस्त्र करते हुए आमने-सामने खड़ा कर दिया है। इसलिए रामकृष्ण परमहंस आदि भारतीय विचारों को अपने हृदय से लेना होगा क्योंकि वह आज की जरूरत है, और उससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि ये शुद्ध सात्विक सत्य से निकलकर आ रहे विचार सही है।" स्वाभाविक रुप से यह वही विचार है जो परस्पर प्रेम भाव से रहने का दुनिया को मार्ग दिखायेंगे।

●●●

विवेकानंद के सपनों को साकार करना है।

नया भारत

विवेकानंद ने नये भारत की कल्पना को इन शब्दों में व्यक्त किया-

"एक नवीन भारत निकल पड़े-हल पकड़कर, किसानों की कुटी भेदकर, मछुए, माली, मोची, मेहतरों की कुटीरों से। निकल पड़े बनियों की दुकानों से, भुजवा के भाड़ के पास से, कारखाने से, हाट से, बाजार से, निकल पड़े झाड़ियों, जंगलों, पहाड़ों, पर्वतों से। इन लोगों ने हजारों वर्षों तक नीरव अत्याचार सहन किया है - उससे पायी है अपूर्व सहनशीलता। सनातन दु:ख उठाया, जिससे पायी है अटल जीवनी शक्ति। ये लोग मुट्ठी भर सत्तू खाकर दुनिया को उलट सकेंगे, आधी रोटी मिली, तो तीनों लोक में इनका तेज न अटेगा? ये रक्तबीज के प्राणों से युक्त हैं, और पाया है सदाचार बल, जो तीनों लोकों में नहीं है। इतनी शान्ति, इतनी प्रीति, मौन रहकर दिन-रात इतना खटना और काम के वक्त सिंह-विक्रम!! अतीत के कंकालो! यही है तुम्हारे सामने तुम्हारा उत्तराधिकारी भावी भारत। प्राचीन काल में बहुत-सी चीजें अच्छी थीं और अनेक बुरी भी। उत्तम वस्तुओं की रक्षा करनी होगी, परन्तु प्राचीन भारत से भविष्य का भारत कहीं अधिक महान् होगा। अतीत तो हमारा गौरवमय था ही, परन्तु मेरा दृढ़ विश्वास है कि हमारा भविष्य और भी अधिक गौरवमय होगा।"

"भारत का पुनरूत्थान होगा, पर जड की शक्ति से नहीं, वरन् आत्मा की शक्ति से। यह उत्थान विनाश से नहीं, वरन् शान्ति और प्रेम की ध्वजा लेकर, संन्यासियों के वेष से होगा - धन की शक्ति से नहीं, बल्कि भिक्षापात्र की शक्ति से सम्पन्न होगा। ... अपने समक्ष मैं एक स्पष्ट देख रहा हूँ कि हमारी यह प्राचीन माता एक बार पुन: जाग्रत होकर नव-यौवनपूर्ण और पूर्व से कहीं अधिक महिमान्वित होकर अपने सिंहासन पर

विराजित है। शान्ति और आशीर्वाद की वाणी के साथ सारे संसार में उसके नाम की घोषणा कर दो।"

"एक बार फिर भारत को विश्व विजय करना होगा। यही मेरे जीवन का स्वप्न है। यही हमारे सामने वह महान् आदर्श है और प्रत्येक को इसके लिए तैयार रहना होगा - वह आदर्श है भारत की विश्वविजय - इससे छोटा कोई आदर्श न चलेगा और हम सभी को इसके लिए तैयार रहना होगा। इसके लिए भरसक कोशिश करनी होगी।"

शिक्षा

विवेकानंद आध्यात्मिक शिक्षा को अपनी शिक्षा में बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। मैं विवेकानंद को पढ़ने के पश्चात वर्तमान शिक्षा को देखता हुँ, तो लगता है, अभी बहुत कुछ अधूरा है।

प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति में छात्र का व्यक्तिगत चारित्र्य एवं अनुशासन उसकी किताबी पढ़ाई जितने ही महत्वपूर्ण थे। गृहस्थ लोग छात्रों की इस साधना के कारण उन्हे सम्मान से देखते थे, तथा छात्रों की सहायता पुण्य कार्य माना जाता था। आज छात्र महाविद्यालय गया, मतलब उसे कुछ भी करने की छूट है तथा गृहस्थ होने पर ही मजबूरी मे वह कुछ सुधर जायेगा। छात्रावासों का वातावरण इस तरह का बन गया कि हम कहाँ से कहाँ पहुँच गये। शिक्षा की धारणा में ही हमने परिवर्तन कर लिया। समय के साथ नयी-नयी विधियाँ सिखना स्वाभाविक है, लेकिन आज शिक्षा मूल सिद्धांत से हट गयी है। इसलिए शिक्षा की सार्थकता पैसा कमाकर भौतिक साधनो को जुटाने तक सिमित हो गई।

हमें विवेकानंद के सपनों का भारत साकार करना है, तो ऐसे युवाओं की जरूरत है जो इसे समझेंगे। यह संभव होगा शिक्षा के भारतीयकरण से। **विवेकानंद कहते है, "शिक्षा का अर्थ है उस पूर्णता की अभिव्यक्ति, जो सब मनुष्यों में पहले ही से विद्यमान है। अत: शिक्षक का कार्य केवल रास्ते की सभी रूकावटें हटा देना मात्र है।"**

विवेकानंद के शिक्षा संदर्भ में विचार

"सच्ची शिक्षा की तो अभी हम लोगों में कल्पना भी नहीं की गयी है। ... यह शब्दों का रटना मात्र नहीं है, तो भी इसे मानसिक शक्तियों का विकास अथवा व्यक्तियों को ठीक तथा कुशल ढंग से इच्छा करने का प्रशिक्षण कहा जा सकता है।"

"शिक्षा किसे कहते हैं? क्या वह पठन मात्र है? - नहीं। क्या वह नाना प्रकार का ज्ञानार्जन है? नहीं, वह भी नहीं। **जिस संयम के द्वारा इच्छाशक्ति का प्रवाह तथा विकास वश में लाया जाता है और फलदायी होता है, उसे शिक्षा कहते हैं।** अब सोचो कि क्या वह शिक्षा है, जिसने निरन्तर इच्छाशक्ति को बलपूर्वक पीढ़ी–दर-पीढ़ी रोककर उसे प्राय: नष्ट कर दिया है, जिसके प्रभाव से नये विचारों की तो बात ही जाने दो, पुराने विचार भी एक-एक कर लुप्त होते चले जा रहे हैं; क्या वह शिक्षा है, जो मनुष्य को धीरे-धीरे यंत्र बना रही है? जो स्वचालित यंत्र के समान सुकर्म करता है, उसकी अपेक्षा अपनी स्वतंत्र इच्छाशक्ति और बुद्धि के बल से अनुचित कर्म करनेवाला मेरे विचार से श्रेयस्कर है।"

"शिक्षा का मतलब यह नहीं है कि तुम्हारे दिमाग में ऐसी बहुत-सी बातें इस प्रकार ठूँस दी जाएँ कि उनमें अन्तर्द्वन्द्व होने लगे और तुम्हारा दिमाग उन्हें जीवन भर पचा ही न सके। **जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और विचारों का सामंजस्य कर सकें, वही वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है।** यदि तुम पाँच ही भाँवों को पचाकर उसके अनुसार अपना जीवन और चरित्र गठित कर सके हो, तो तुम्हारी शिक्षा उस आदमी की अपेक्षा बहुत अधिक है, जिसने एक पूरे पुस्तकालय को कण्ठस्थ कर लिया है। ... यदि अनेक प्रकार की जानकारियों का संचय करना ही शिक्षा हो, तब तो ये पुस्तकालय संसार में सर्वश्रेष्ठ मुनि और विश्वकोष ही ऋषि हैं।"

"हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्र-निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरों पर खड़े होना सीखें। जो शिक्षा

सामान्य व्यक्ति को जीवन संग्राम में समर्थ नहीं बना सकती, जो मनुष्य में चरित्र-बल, परोपकार की भावना और सिंह के समान साहस नहीं ला सकती, वह भी क्या कोई शिक्षा है? शिक्षा वहीं है, जिसके द्वारा जीवन में अपने पैरों पर खड़ा हुआ जा सकता हैं।"

वर्तमान शिक्षा

विवेकानंद के विचारों के परिपेक्ष्य में हमारी शिक्षा ब्रिटिशों के जमाने कि ही लगती है। आज भी हमारी विश्वविद्यालयीन शिक्षा छोटे-मोटे परिवर्तनों के साथ वैसे ही चल रही है, जैसे स्वाधीनता पूर्व थी। स्वामीजी का अधूरा कार्य पूरा करना है तो शिक्षा को बदलना होगा। आज इतने वर्षो बाद हम लगातार अनुभव कर रहे है कि हमारे बड़े शिक्षा संस्थान भी कैसे कई बुराईयों को जन्म दे रहे है। रैगिंग, व्यसनाधीनता, अश्लीलता, छात्राओं से अभद्रता की घटनाएँ आज सामान्य बाते बन गयी है। पढ़े लिखे लोग अधिक भ्रष्टाचार व कुप्रथाओं के साथ चलते दिखते है। शिक्षक-विद्यार्थी संबंध मात्र औपचारिक और लेनदेन के है। यह बहस छिडी हुयी है कि भारत को 21 वी सदी में कैसा बनाना है।

स्वाधीनता के पश्चात हमारी कुप्रथाएँ, बुराईयाँ तथा कमीयों को दूर करने हेतु सभी विश्वविद्यालयों से बडी फौज निकलनी थी, लेकिन उतनी मात्रा में यह संभव नही हो पाया। स्वामी विवेकानंद के विचारों को शिक्षा संस्थानों में एवं अन्य स्थानों पर प्रचारित करने का कार्य कई संस्थाएँ जैसे रामकृष्ण मठ, विवेकानंद केंद्र, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा विद्यार्थी परिषद आदि संगठन लगातार कर रहे है। उसके परिणामस्वरूप विवेकानंद की 150 वी जयंती तक एक नया दौर आ गया है, कई छात्र जो देश या विदेश में उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे, वह देश के गौरवशाली विषयों के बारे में, समाजसेवा के बारें में गंभीरता से सोच रहे है। हजारों की संख्या में युवा प्रत्यक्ष रूप से इन क्षेत्रों में कार्य भी कर रहे है।

लेकिन समग्र शिक्षा में बदलाव की विवेकानंद की कल्पना साकार करने हेतु अभी बहुत कुछ करना होगा। उनके अनुसार भारत का गौरवपूर्ण इतिहास, दुनिया के लिये उसका योगदान, जीवन के हर क्षेत्र की ओर देखने की हमारी दृष्टि, पारंपरिक ज्ञान व धर्म की कल्पना व उस पर आधारित भविष्य के राष्ट्र, समाजजीवन, भौतिक प्रगती की विभिन्न वस्तुओं व कल्पनाओं को कैसे संभाला जाए जैसी कई बातों की शिक्षा हमारे पाठ्यक्रमों में लानी होगी।

व्यवस्था परिवर्तन व सुधार

विवेकानंद ने उस समय पुरी दुनिया का दर्शन किया था, भारत का पिछड़ापन तथा यूरोप - अमरिका की प्रगती भी देखी थी। जापान व चीन की स्थिती को भी वह समझ रहे थे। भारत का इतिहास क्रम व यूरोप का इतिहास क्रम बड़ी गहराई वे जान रहे थे। इसलिए हमारी तथा उनकी मजबूती व कमियों को अनुभव कर रहे थे। आधुनिक विज्ञान को पश्चिम से सीखने की बात वे लगातार करते थे। लेकिन हर समुदाय की व्यवस्थाएँ उसकी आत्मा व आवश्यकतानुसार हो, यह उनका आग्रह था। आज स्वाधीनता के 65 वर्ष बाद भी हम उन अंग्रेजी व्यवस्था के सहारे लडखडा रहे है। तथा कई खामियों के चलते आज वह अव्यवस्था एवं भ्रष्टाचार मे तब्दील हो गयी है। धर्म आधारित व्यवस्था तथा आध्यात्मिक अनुभूति से ओतप्रोत समाज में ही व्यवस्थाएँ सहज-सुलभ, लोकोपयोगी तथा भ्रष्टाचार से अधिकतम दूर रह सकती है। अत: हमारा लोकतंत्र, कानून, न्यायालय, पुलिस, प्रशासन आदि में भारी बदलाव की आवश्यकता है।

वर्तमान समय में विवेकानंद

वर्तमान समय में तकनीकी व विशेषकर संपर्क प्रणालीओं में अत्याधिक प्रगती हुयी है। हवाई जहाज सेवाओं के सुधार के कारण पुरी दुनिया में यात्राएँ सुलभ हुयी है। रेल, रास्ते, बडे-बडे पुल आदि ने यात्राओं को सुखद बना दिया है। दूरभाष, भ्रमणध्वनी (मोबाईल), आंतरताना (इंटरनेट) तथा टीवी चैनलों आदि में सेटेलाइट तकनीकी से

पुरी दुनिया छोटी हो गयी है। यह कह सकते है कि पश्चिम से चली इस धारा ने पूरी दुनिया का अंतर कम कर दिया है। वैश्वीकरण के दौर में व्यापार के दरवाजे खोलने के प्रयास भी काफी हुये है। दुनियाभर की वस्तुएँ आपको एक ही बाजार में उपलब्ध है। लेकिन व्यक्ति-व्यक्ति के बीच का अंतर कम होने की जगह बढता जा रहा है। शस्त्रों की स्पर्धा लगातार जारी है। विश्वयुद्ध से भले ही हम लगभग 70 वर्षों से दूर है, लेकिन आतंकवाद की मार पुरी दुनिया झेल रही है। गरीबी - अमीरी का अंतर बढता जा रहा है, जो नये संघर्ष को जन्म दे रहा है। भारत भी भौतिक प्रगती की इस स्पर्धा मे पीछे नहीं है। हम भी अब महाशक्ति बनने की ओर बढ रहे है। लेकिन हमने भी "धर्मनिरपेक्षता" का चोला ओढकर पश्चिम के अनुभव को ही आधार बनाकर धर्म को हर क्षेत्र में बाहर रखा है। उसीके परिणाम स्वरूप हमारे जीवन में जीवनमूल्यों का लगातार अभाव हो रहा है। सांस्कृतिक जीवन के कई मापदंड टूट रहे है। बलात्कार, चोरी, व्यापारीकरण (पानी का विक्रय हो रहा है), अमर्यादित भ्रष्टाचार के चलते जीवन के हर क्षेत्र में उपर बैठे लोग बेईमानी तथा भ्रष्टाचार के आधार पर सामान्य जनता का शोषण कर रहे है। दुसरी तरफ सामान्य लोग अभी भी भारी मात्रा में परिश्रमपूर्वक एवं अभावों में लेकिन धर्म के आधार पर प्रामाणिकता से जीवन यापन करते हुए दिखते है। स्वामी विवेकानंद का मन इन्ही लोगों के लिए तड़पता था। हमे उन जीवन मूल्यों की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे नितांत आवश्यकता महसूस हो रही है, जो समाज को सही दिशा दे सके।

दिल्ली में हाल ही मे सार्वजनिक स्थान पर हुए जघन्य सामूहिक बलात्कार कांड (दामिनि कांड) के पश्चात लोग काफी चिंतित हुए तथा कड़े सजा के प्रावधान वाले नये कानून की मांग हुयी। पुलिस प्रशासन को दोष दिया गया। वह सब होना चाहिए। लेकिन सोचने का विषय है कि हमारे समाज में ऐसे लोग तैयार कैसे हो रहे हैं? ऐसे लोग ही तैयार न हो इसलिए क्या करना होगा? कुछ दिनों से राजनीति से लेकर क्रिकेट तक सारे क्षेत्र में भ्रष्टाचार के मामले सामने आ रहे है। लोग आक्रोश में है कड़े प्रावधान वाले लोकपाल / लोकायुक्त की मांग जोरों पर है।

लेकिन यहाँ हमें विवेकानंद के उस संदेश की और ज्यादा जरूरत है कि धर्म, हमारी आत्मा है, हमें किसी भी क्षेत्र में आगे बढना है तो हमारा मार्ग धर्म की स्थापना से होगा। सारी व्यवस्थाएँ धर्म आधारित करनी होगी, जो व्यक्तियों के बीच परस्पर प्रेम का भाव बढायेगी तभी यह शोषण व अन्याय करनेवाली व्यवस्था को हम सुधार सकते है।

हमारे नोट्स हमे ही बनाने होंगे

विवेकानंद कहते थे कि विदेशीयों पर निर्भरता कम करो, स्वावलंबी बनो। लेकिन हमने हमारे पुरूषार्थी इतिहास को बड़ी मात्रा में विस्मृत कर दिया है। इसलिए हमारी वर्तमान पिढ़ीयाँ स्वाधीनता के पश्चात भी अपनी व्यवस्थाएँ, आर्थिक प्रगती, हमारी भविष्य की कल्पनाएँ यहाँ तक कि रोजमर्रा के परिवारिक जीवन की व्यवस्थाओं तक के लिए विदेशीयों पर निर्भर है। हमारे निति निर्धारकों की यह दयनीय स्थिति देश के लिए घातक सिद्ध हो रही है। विदेशीयों की ट्यूशन के नोटस् से आप परिक्षा उत्तीर्ण कर सकते है लेकिन राष्ट्रजीवन इस पर खड़े नहीं हो सकते। इस के लिए हमें अपने गुरू विवेकानंद से शिक्षा प्राप्त करनी होगी तथा स्वयं के नोटस् स्वयं बनाने होंगे। हमारा अध्ययन, अपने अनुभव, हमारे ज्ञान को आधार बनाकर हमारी आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार हमारे नोटस् ही हमें सहीं दिशा देंगे, तथा राष्ट्रजीवन एवं व्यक्तिगत जीवन की परीक्षा में हम उत्तीर्ण होंगे। विश्वविद्यालयीन परीक्षा मे हम बडी मेहनत करते है ताकी स्वयं व हमारा परिवार सुखी हो। यह परीक्षा अपनी भारत माँ व उसके पुत्रों के सुख के लिए मेहनत से उत्तीर्ण करनी होगी। विवेकानंद के आव्हान को इस अर्थ मे लेना प्रासंगिक होगा। स्वामी विवेकानंद "आधुनिक भारत: समस्या और समाधान" में कहते है कि प्राचीन भारत का इतिहास विशाल उर्जा, विविधांगी पराक्रम एवं अपूर्व धैर्य के वर्णनो के साथ ही दैवी जाति के विचारशील वर्णनों से भी भरा है। वे कहते है कि दुनिया का इतिहास सम्राटों, उनकी सत्ता के दुर्भावों से प्रभावित जनता की कहानी है। लेकिन भारत के धार्मिक साहित्य वैचारिक प्रगती, पुराणों की सामान्य मनुष्यों की जीवन कथाएँ आदि से भरा पडा है। यह इतने बड़े मानवीय समुदाय के विकास की गाथा है।

विवेकानंद - मेरे अभियान की योजना

विवेकानंद कहते है कि वे उपरी तौर पर नही परंतु आमूल-चूल परिवर्तन लाना चाहते है। लेकिन वह नष्ट या समाप्त नही अपितु वृद्धि करना चाहते है। उनका विचार स्पष्ट है कि इस राष्ट्ररूपी यंत्र को हम गति देंगे। विवेकानंद स्पष्ट रूप से कहते है कि इस राष्ट्रीय जीवन को ईंधन की जरूरत है, उसे दो, बाकी सब अपने आप होगा। बुराईयां किस समाज में नही होती? लेकिन हमारी मान्यता है कि अच्छा-बुरा साथ ही होते है। आप अन्न का एक ग्रास भी दुसरे किसी को वंचित किए बगैर नही खा सकते। इसलिए विवेकानंद कहते है कि बुराई के साथ लड़ने का काम एकांगी (वस्तुनिष्ठ) नहीं अपितु भाव आधारित होगा। अर्थात बुराई के साथ संघर्ष वास्तविक लड़ाई के माध्यम की अपेक्षा लोकशिक्षण से बेहतर होगा।

विवेकानंद परिवर्तन हेतु प्राचीन गुरूओं की कल्पनाओं पर चलने की आज्ञा देते है। उनका व्यापक तौर पर मानना था कि उन्होंने गहन अध्ययन एवं साधना से महान समाज को जन्म दिया था। उसमें शक्ति तथा शुद्ध भाव दोनों साथ थे। उनकी और आज की परिस्थितियों में थोडा बहुत अंतर आया है, बस उतना ही छोटा-मोटा परिवर्तन करने से उनके अनुभव हमारे लिए सर्वाधिक योग्य है। अर्थात हर समाज-राष्ट्र की एक आत्मा होती है, जो हमारे यहाँ धर्म में है। इसलिए यहाँ जो भी होगा सामाजिक, राजनैतिक, भौतिक सबकुछ उसी माध्यम से होगा। अगर हम उसे छोड़ेंगे तो हमारा अस्तित्व ही संकट में होगा। विवेकानंद अपने अनुभव से कहते है कि अगर अमरिका वालों को धर्म समझाना है, तो उन्हें सामाजिक जीवन के परिणामों से समझाना होगा। धर्म को इंग्लैंड के लोगों को वेदांत के माध्यम से संभावित राजनैतिक जीवन के परिणामों से समझाना होगा। विवेकानंद का स्पष्ट विचार है कि भारत में परिवर्तन आने हेतु सामाजिक या राजनैतिक विचारों से भर देने से नही होगा, अपितु सर्वप्रथम आध्यात्मिक विचारों को प्रवाहित होना होगा।

वर्तमान समय का सर्वोत्तम कार्य

उपरोक्त विषय में स्वामी जी कहते है की लोगों को उनके ही ग्रंथो में छुपे सत्य को सुनाना यही आज महत्वपूर्ण कार्य है।

राजनैतिक विचारो का उपहार कर्कश बाजा बजाकर तथा दल-बल के साथ दुसरों को दिया जाता है, तथा लौकिक एवं सामाजिक विचारों का उपहार आग एवं तलवारों के जोरों पर थोपा जाता है। लेकिन आध्यात्मिक ज्ञान का उपहार शांतीपूर्ण तरीके से दिया जाता है, जैसे दवबिंदू गिरते समय न दिखते है न आवाज करते है लेकिन फिर भी परिणाम स्वरूप कई गुलाब खिल जाते है। भारत ने यही उपहार बार-बार दुनिया को दिया है।

भारत की एकता अखंडता

विवेकानंद कहते है – एशिया व विशेष कर भारत में कैसा दृश्य है, जातियों की दिक्कतें, भाषा की, सामाजिक, राष्ट्रीय समस्याए दिखती है, लेकिन सबको जोड़ने वाले धर्म की भट्टी में सब पिघल जाती है। हमारी प्राण शक्ति आध्यात्म है, वह राष्ट्र के शरीर में ठीक से बहेगा, तो हम सब कुछ कर लेंगे। हमारी राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, भौतिक समस्याएँ, गरीबी सब कुछ ठीक हो जायेगा।

भारत के अपार ज्ञान को सामान्य जन तक पुहँचाना

भारत के ग्रंथो के अपार ज्ञान भंडार को उनकी भाषा में जन–जन तक ले जाना यह विवेकानंद जरूरी समझते थे। वे इसे सामान्य जनों में लोकप्रिय बनाना चाहते थे। तथाकथित पिछड़ी जातीयों के उत्थान से ही जाति समस्या के समाधान के विवेकानंद पक्षधर थे।

भारत के उज्वल भविष्य का सूत्र

विवेकानंद कहते है, भारत के उज्वल भविष्य के लिए उसकी कुंजी संगठन, शक्तिसंवर्धन तथा परस्पर इच्छाओं के समन्वय (सामाजिक एकता) में है।

विवेकानंद का आव्हान

मनुष्य को बचाना है। मनुष्य को अन्न, शिक्षा एवं आध्यात्मिकता देने की जरूरत है।

नारी का उद्धार

देश में नारी का काफी अपमान हुआ है, उसे पिछड़ा बना दिया है। सर्वप्रथम सामान्य शिक्षा से मजबूत बनाने पर उनका जोर था। स्त्रीयों की उपेक्षा ही भारत के पतन का कारण है। वो कहते थे भारत में दो बड़ी बुरी बातें है, स्त्रीयों का तिरस्कार और गरीबों को जाति भेद के द्वारा कोसना।

●●●

"किसी एक विचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाओ । कुविचारों का त्याग कर केवल उसी विचार के बारे में सोचो । तुम पाओगे कि सफलता तुम्हारे कदम चूम रही है ।"

-स्वामी विवेकानंद

विवेकानंद की कल्पना के आधार पर वर्तमान समय में करणीय कार्य: राष्ट्र पुनर्निर्माण की योजना

राष्ट्र के प्रति गौरव भाव जगाना

भारत के प्रति सम्मान एवं गौरवभाव जगाना अत्यंत आवश्यक है। विद्यालयों-महाविद्यालयों के पाठयक्रम में गौरव का भाव जगाने वाली विषय वस्तु अनुपस्थित है।

- इस हेतु सर्वप्रथम कार्य होगा, भारत के गौरवपूर्ण इतिहास को सामने लाकर उसे हमारी वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ीयों को समझाना।

- इतिहास का मापदंड पश्चिम के अनुभव पर कुछ इस तरह बना दिया है, कि ईसापूर्व की अधिकतम बातें काल्पनिक हो जाती है। इस मापदंड पर हमारे रामायण, महाभारत, वेद, पुराण जिसमें हमारा ज्ञान, शास्त्र तथा हमारी ज्ञान परम्परा का इतिहास, तत्कालीन समाज जीवन आदि काल्पनिक हो जाता है, अर्थात वह शोधपूर्ण साहित्य से परे हो जाता है। और इस तरह वह हमारे प्रेरणास्पद ज्ञान के स्त्रोत या गौरवपुर्ण इतिहास की श्रेणी से हट जाता है।

- ऐसी स्थिति में हमारा प्रेरणास्पद ज्ञान हमारी सोच को प्रभावित नही कर पाता है व हम विस्मृती में चले जाते है, हम कौन है? यह विस्मरण हमारे पुरूषार्थ एवं स्वाभिमान को कमजोर करता है। यह संभ्रम कि हमारा क्या है? किसे संरक्षित करना है यह निश्चित होना कठिन हो जाता है। यह आज हमारी मानसिक समस्या हो गयी है। इस कारण हम कई बातें व्यक्तिगत जीवन में करते है, लेकिन सार्वजनिक जीवन में उनसे जुड़ना नही चाहते। आज व्यापक रूप में यह दोगलापन (Hypocrisy) तथाकथित रूप से हमारे जीवन का हिस्सा बना है।

उपरोक्त बातों में परिवर्तन हेतु सघन प्रयास समय की मांग है। इस हेतु कई नये अभियान, उपक्रम तथा प्रयास करने होंगे।

विवेकानंद राष्ट्र जीवन के मेनेजमेंट गुरु

आज के युवा विवेकानंद कों भविष्य के भारत पुनर्निर्माण के मेनेजमेंट गुरु के रुप मे स्वीकार करे। फलत: उनके गुरुमंत्र से हमे एक सतत विकास की प्रक्रिया का रास्ता मिलेंगा।

करणीय कार्य

१. भारत के प्रति गौरव का भाव जगाने हेतु कुछ प्रयास

भारत की वास्तविक पहचान

भारत क्या है? तथा हमारी विशेषताएँ क्या है? हमारी पहचान हमारी संस्कृति है, जो ज्ञान आधारित तथा व्यावहारिक है। सभी में भगवान का अंश है, इस परम ज्ञान के आधार पर हमारा परस्पर संबध, उस आधार पर समूचे रिश्तें-नातों की व्यवस्था, सभी मेरे अपने है, तो उनके सुख-दु:ख की चिंता, ऐसे ही हमारा दृष्टिकोण विकसित होता है। सामजिक ताना-बाना, न्याय-अन्याय, पर्यावरण की दृष्टि यह इसी आधार पर विकसित होता है। जिससे समृद्धी व सभी का विकास संभव होता है।

यह सब करने की एक पद्धति होती है वह व्यापक रूप में संस्कृति कहलाती है। मनुष्य ऐसा सोचे तथा करे इस हेतु शुद्धिकरण की एक प्रक्रिया बनती है, फिर इस प्रक्रिया के सभी प्रतीक हमारी पहचान बनते है, जिनकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य बन जाता है।

पहचान के प्रतीक

हमारे वेद, पौराणिक ग्रंथ, उत्सव, महापुरूषों के स्थान, नृत्य, संगीत आदि कलाएँ जैसे प्रतीक हमारी पहचान है।

हमारी नई पीढ़ी में इनके प्रति उचित भाव तथा ज्ञान एवं जुड़ाव बने यह राष्ट्रीय कार्य है।

भारत का विश्व में योगदान

भारत का विज्ञान, आयुर्वेद, योग, समाजशास्त्र के विभिन्न विषय, मानव जीवन की उच्च परंपराए जैसे कई सारे विषयों में योगदान हमारी नई पीढ़ी तक पहुँचाना यह भी राष्ट्रीय कार्य है।

गौरवपूर्ण इतिहास

हमारे पूर्वजों के पराक्रम, उनकी जीवन मूल्यों के प्रति निष्ठाऐं, उनका व्यावहारिक उच्च जीवन, विशाल समृद्धी व जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे प्राप्त सफलताए, समृद्धि व सात्विक जीवन का उत्तम मेल जैसे कई विषय वर्तमान पीढी के समक्ष लाना हमारा कर्तव्य है।

भारत मे हमेशा दो सेनाएं

एक सशस्त्र सेना जो बाहर के शत्रुओं से लड़ने के लिए सक्षम तथा तत्पर थी। साथ ही व्यक्ति के अंदर की बुराईयाँ तथा कमजोरीयों से लड़ने में प्रजा का साथ देने वाली त्यागी सन्यासीयों या संतो की मजबूत फौज यही भारत की विशेषता थी।

उपरोक्त बातों की समझ वर्तमान तथा भावी पीढ़ीयों के मन में भारत के प्रति गौरव तथा भविष्य के भारत को बनाने के प्रति आत्मविश्वास के साथ आगे बढने हेतु प्रोत्साहित करेगी।

२. भारत के वर्तमान को समझना

सब देशवासी मेरे है, जब यह भाव जागेगा, तो स्वत: उनके प्रति प्रेम का उद्‌भव होगा। फिर आम लोगों के जीवन की दशा को ठीक करने का संकल्प बनेगा। इसलिए समाज के प्रति आत्मीयता जगाने वाले कार्यक्रम, गतिविधियाँ समाज में बढ़ाने की आवश्यकता है।

इस हेतु महाविद्यालयों से, शहरों-ग्रामों से युवाओं की टोलीयाँ समाज मे गरीबी, पिछड़ापन को देखने जाए ऐसे उपक्रम।

देश की समस्याएँ जैसे -आर्थिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय सुरक्षा पर अध्ययन। शहरों, गाँवों तथा जंगलों-पहाडों में व्यवस्थाओं का अभाव जैसे रास्ते, पानी, चिकित्सा व्यवस्थाएँ, बालकों को पौष्टिक आहार, गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य तथा बाल मजदूरी, निरक्षरता, बेरोजगारी का विकराल स्वरूप आदी मुद्दों पर पहल की जरूरत है। बलात्कार, हत्याएँ तथा आतंकवाद, नक्सलवाद जैसी समस्याओं को मूल से समझना एवं न्यायालय, सरकारी प्रशासन व पुलिस द्वारा सामान्य जनों की प्रताड़ना, भ्रष्ट चुनावी राजनीति जैसे मुद्दों पर संवेदना एवं परिवर्तन के प्रयास की जरूरत है ।

३. भविष्य के भारत की कल्पनाएँ

आर्थिक समृद्धि व उपभोग भी धर्म के माध्यम से संभव है

आज की पीढ़ी मे एक बहुत बडा भ्रम है कि पैसा कमाना, मौज मस्ती करना आदि तथा धर्म अलग-अलग है। धर्म का अर्थ व्यावहारीक जीवन का त्याग, यह भ्रम की स्थिति है। वास्तव मे जैसे महर्षि व्यास कहते हैं कि धर्म का पालन करोगे तो जीवन मे अर्थ एवं काम दोनों का उपभोग निश्चित रुप से ले पाओगे, अन्यथा धर्म छोड़ दिया तो

जल्द की दुष्चक्र मे फँसकर दोनो से वंचित हो जाओगे। वर्तमान समय में भी बड़े-बड़े लोगो के उदाहरण से पता लगता है कि कैसे मूल्य मे गिरावट से वह संकट में फँस जाते है।

यह भी एक भ्रम व्याप्त है कि विकसित भारत का अर्थ है यूरोप-अमरीका जैसा भारत। परंतु हमें समृद्धि के साथ सुख-समाधान से परिपूर्ण जीवन का महत्व ध्यान में है, तो इस मापदंड पर भविष्य का भारत अलग पद्धति से विकसित करना होगा। व्यापार होगा लेकिन उसका उद्देश्य वस्तुऐं सामान्य व्यक्ति की पहुँच में लाना होगा। इसलिए दाम बढ़ाने वाली बाजार व्यवस्था के बदले सस्ती दाम देने वाली व्यवस्था लागु करनी होगी।

भारत को सर्वाधिक आधुनिक बनाना है। भारत जीवन के हर क्षेत्र में सक्षम तथा अग्रसर हो। दुनिया के हर कोने से नये विचार, तंत्रज्ञान आदि का हम स्वागत करें। लेकिन उसे लेते समय हमारे जीवन के अनुकूल उसे बनाएँ तथा संस्कृति के विपरीत कोई बात लागू न करें जो हमारी विशिष्टता या पहचान को ही मिटा दे। इसलिए भारत का मॉडल (Model) किसी की नकल न हो, अपितु अभी तक के अनुसंधानों एवं अनुभवों पर आधारित तथा अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित आधुनिक राष्ट्र हो, महाशक्ति हो।

आधुनिक समय मे धर्म-संस्कृति की जरुरत

भारत में धर्म–संस्कृति की भूमिका पूजा पद्धती वाले संप्रदायों से अलग है। हमारे जीवन मे संस्कृति हमे मनुष्य एवं पर्यावरण सभी से जोडती है। यही हमारे संगठन, एकता एवं शक्ति तथा समुचित विकास का आधार है। इसे कुछ मात्रा मे छोड़ते ही जीवन के हर क्षेत्र मे परस्पर संतुलन के अभाव को हम अनुभव कर रहे हैं। आज भी हमारे देश मे बुद्धी, शक्ति आदि का अभाव नही अपितु देश-समाज के प्रति आत्मीय भाव के अभाव मे सक्षम व विभिन्न क्षेत्र के नेतृत्व की वह सारी उर्जा स्वार्थ मे लगने से समस्या उत्पन्न हो रहा है। इसलिए विवेकानंद का यह विचार कि धर्म के बिना हमारा उद्धार संभव नही, सार्थक सिद्ध होता है।

४. भविष्य हेतु हमारे व्यावहारिक उपक्रम

निम्न मुद्दों पर प्रबोधन का कार्य राष्ट्रीय कार्य है ।

- स्वाध्याय मंडल जैसे कई प्रबोधन कार्यक्रम, सामाजिक परिस्थिति या राष्ट्रीय परिस्थिति से जुडे मुददों पर सर्वेक्षण, अध्ययन सीमा दर्शन जैसे उपक्रम महत्वपुर्ण कार्य हैं ।
- समाज की सेवा हेतु समय देना सोशल इंटर्नशिप जैसे उपक्रम यह भी बहुत बड़ा राष्ट्रीय योगदान है ।
- विवेकानंद ने "त्याग एवं सेवा" इस मंत्र को देश के युवाओं को दिया था वह आज स्वाधीन भारत के लिए भी प्रासंगिक है। त्याग एवं सेवा को अपनी क्षमतानुसार अधिकाधिक मात्रा में लागू कर सकते है ।
- सामाजिक समरसता के मूल्य को जीवन में उतारते हुए सामाजिक सद्भाव बनाने में योगदान कर सकते है।
- दलितों एवं पिछड़े वर्ग को नेतृत्व देने हेतु सघन प्रयास – ऐसे प्रयासों में सहायक की भूमिका।

भविष्य के संदर्भ में मॉडल

भविष्य के संदर्भ में मॉडल बनाने हेतु मूल रुप में शोधकार्य राष्ट्रीय कार्य है। यह कार्य विश्वविद्यालयो सें लेकर एक किसान द्वारा अपने खेत या घर बनाने वाले मिस्त्री तक कोई भी विकसित करता है। हमारा परिवार कैसा हो ? यह सामाजिक विज्ञानी से लेकर एक गृहिणी तक कोई भी विकसित कर सकता है। विवेकानंद से प्रेरणा लेकर हमे ऐसे कार्य स्वत: आगे बढ़ाने की जरुरत है।

अ. शिक्षा का भारतीयकरण

भारतीय भाषाओं का आग्रह व सम्मान, पुस्तकों में भारतीय कल्पनायें, महापुरुषों का सम्मान, लैंगिक शिक्षा की जगह मूल्य शिक्षा, आधुनिक विज्ञान के साथ भारत की विज्ञान परंपरा, जैसे कई मुद्दों पर आग्रह एवं अध्ययन का कार्य राष्ट्रीय कार्य है ।

ब. विज्ञान के अनुसंधान

विज्ञान के अनुसंधान-हमारी खेती, सभी को अन्न, घर, मूलभूत सुविधायें, पानी आदी हेतु ढेर सारा अनुसंधान हमारा राष्ट्रीय कार्य है। अत्याधुनिक सुरक्षा साधन एवं नवीनतम प्रणालियों का विकास आवश्यक है ।

स. सामाजिक समरसता

सामाजिक समरसता के आग्रह को रोजमर्रा के जीवन में स्थापित कराना भारत के हित में एक महान कार्य है। दहेज, स्त्री भ्रुण हत्या जैसी बुराईयों से लड़ना भी महत्त्वपूर्ण कार्य है ।

द. पर्यावरण व विकास का संतुलन

पर्यावरण व विकास का संतुलन के अपने मॉडल (ढाँचे) को बनाने पर शोध व जागरण आज हमारे कर्तव्य है ।

क. व्यवस्था में सुधार एवं परिवर्तन

पुलिस प्रशासन, न्यायालय, चुनाव आदी व्यवस्थाओं को लोक सुलभ एवं पारदर्शी तथा सार्थक बनाने हेतू तात्कालिक सुधारों के साथ-साथ हमारी आत्मा के अनुरूप "व्यवस्था परिवर्तन" के माध्यम से उनमें आमूल-चूल बदलाव लाना होगा।

ख. विदेशियों से आत्मविश्वास के साथ संवाद

हमें विदेशियो से सम्मानपूर्वक लेकिन आत्मविश्वास के साथ संवाद करने की जरुरत है। आज के वैश्विक युग मे हम भी सक्षम है यह सत्य जानने की जरुरत है। हमारा गौरवपूर्ण इतिहास, वर्तमान पीढ़ी की सफलता, हमारी नैसर्गिक, भौगोलिक व बौद्धिक कुशलताएँ युवाशक्ति के आत्मविश्वास का आधार बने एवं भविष्य की शांतिपूर्ण दुनिया की ग्यारंटी हमारी शक्ति में निहित होना यह वास्तविकता हमारे संवाद की विशिष्टता रहेगी।

ग. सरकारों पर अंकुश

विवेकानंद उस समय अंग्रेजों की गुलामी से भारत को तत्काल मुक्त कराना चाहते थे। उस समय की पीढ़ीयों ने इस दायित्व को निभाया, अब स्वाधीन सरकारों पर अंकुश रखने में युवाओं एवं उनके संगठनो की जरुरत है। जिससे आम आदमी का जीवन तथा भारत का भविष्य सुरक्षित एवं उज्वल बनाया जाना संभव हो । आज यह कार्य देशभक्ति का कार्य है।

घ. लोक जागरण

लोक जागरण द्वारा जनता की इच्छाओं को समन्वित करना यह भारत के जनता की सेवा है । इसलिए ऐसे विभिन्न कार्यो में सहभागी होना वर्तमान समय में राष्ट्रीय कार्य है ।

संघ कार्य एवं विवेकानंद की दृष्टि का प्रकटीकरण

1925 से प्रारंभ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व कई संगठन यह सबकुछ विवेकानंद के विचारों का प्रकटीकरण है तथा भारत के पुनर्निर्माण की व्यापक व दूरगामी योजना है। स्वामी विवेकानंद की 150 वी जयंती के निमित्त ऐसे कई संगठन या समूहों को गठित कराना, सक्रीय कराना तथा ऐसे माध्यमों से हर युवा को विभिन्न प्रकार से अधिक से अधिक मात्रा में सहभागी बनाना यह महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कर्तव्य है ।

शुभकामना.....

●●●

प्रा. दत्ता नाईक द्वारा लिखी गई व अभाविप द्वारा प्रकाशित पुस्तक "**राष्ट्रपुरूष विवेकानंद**" की प्रस्तावना श्री सुनील आम्बेकर द्वारा लिखी गयी जो यथावत प्रस्तुत है।

स्वामी विवेकानंद भारत के ऐसे सुपुत्र हैं, जिन पर हर कोई गर्व कर सकता है तथा प्रत्येक युवा के लिये उनका जीवन प्रेरणादायी है। मेरे एक मित्र ने उनका जीवन पढ़ने के पश्चात् कहा कि हम सूचना प्रौद्योगिकी (आई.टी) के दस हजार लोग मिलकर भी पश्चिम पर जितना प्रभाव नही डाल सकते, उसके कई गुना प्रभाव स्वामीजी ने एक झटके में ही स्थापित कर दिया था। इसके पूर्व ऐसे विश्वव्यापी प्रभावों के प्रसंगो पर भारत काफी मजबूत स्थिति में था, परंतु स्वामी विवेकानंद के समय भारत बहुत कमजोर, गरीब तथा अंग्रेजों की दासता में बंधा था। राजनैतिक पराधीनता के साथ ही अंग्रेजी शिक्षा के परिणामस्वरुप भारत के गौरवपूर्ण इतिहास के प्रति उदासीन एवं अंग्रेजों की भक्ति में लीन ऐसी पीढ़ी का निर्माण भी उस समय हो रहा था। पश्चिमी जगत में भारत के संदर्भ में काफी कुछ गलत धारणाएँ थीं। संभवतः स्वामीजी के लिए नियति की यही इच्छा रही होगी कि वह यह चक्र तोड़ें व स्थापित कर दे भारत का गौरव। उनके जीवन काल में ही स्वामी विवेकानंद ने कई प्रकार से विभिन्न रुचि रखने वाले सामान्य एवं प्रभावी व्यक्तियों को दिशादर्शन किया। भारत को नींद से जागृत होने एवं उसका भ्रम टूटने के लिए यह काफी प्रभावी एवं परिवर्तनकारी कार्य था। यह विशेष कार्य ही स्वामी विवेकानंद को "सार्वकालिक वैश्विक गुरु" की श्रेणी में स्थापित करता है।

विवेकानंद के जीवन में भारत के आध्यात्मिक चिंतन की गहराई एवं उसका विश्व कल्याण का जीवन-उद्देश्य साफ तौर पर दिखाई देता है। उनकी प्रखर देशभक्ति एवं वैश्विक दृष्टिकोण का संतुलन आज भी पूरे भारत के लिए मार्गदर्शक है। इसलिये आज उनकी 150 वी जन्मजयंती मनाते समय उन्हें, उनके विचारों एवं कार्यों द्वारा अधिक गंभीरता से समझने की आवश्यकता है।

1885 में राष्ट्रीय कांग्रेस स्थापित हुई और लगभग उसी समय गुरुदेव रामकृष्ण परमहंस के निर्वाण के पश्चात स्वामी विविदिशानंद (विवेकानंद का तात्कालिक नाम) ने वराहनगर में मठ को स्थापित किया। यह आधुनिक समय में आध्यात्मिक साधना के साथ समाज के गरीब, पिछड़े भाई-बहनों की सेवा को भी साधना मानकर चलने वाला संन्यासियों का मठ था। उनके अनुसार देशभक्ति हर नागरिक व विशेषकर युवाओं के लिए आवश्यक संकल्प था।

अंग्रेजों से भारत को मुक्त कराने हेतु संघर्ष जितना महत्वपूर्ण राष्ट्रकार्य था, उतना ही महत्वपूर्ण राष्ट्र कार्य गरीबी से मुक्त कराना भी। सामाजिक भेदभाव, छुआछूत तथा धर्म के नाम पर होने वाली लूट से समाज को मुक्त करना युवाओं का महत्वपूर्ण कार्य है, ऐसा उनका आग्रह था। इस संदर्भ में विवेकानंद के कितने ही उद्धरण तथा जीवन के प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत पुस्तक में उपलब्ध हैं।

समय जितना आगे बढ़ेगा, विवेकानंद भारत के लिए उतने ही प्रासंगिक बने रहेंगे तथा उनके विचार एवं कार्य भी नित्य-नूतन प्रतीत होंगे। भौतिकता से संपन्न एवं प्रभावित पश्चिम को उन्होंने अपने सात्विक प्रेम एवं स्पष्ट आध्यात्मिक तथा विश्व शांति के आधुनिक विचारों से आकर्षित किया। त्याग एवं नि:शंक चारित्र्य कैसा कमाल कर सकता है, इसका जीता-जागता उदाहरण प्रस्तुत किया। आज भी युरोप और अमेरिका का जबरदस्त आकर्षण बना हुआ है, लेकिन विवेकानंद ने हमारे प्रभाव के बीज अपने छोटे से जीवनकाल में ही पूरी दुनिया में बिखेर दिये थे। उनकी सोच "वेदान्त इन एक्शन" याने प्रत्यक्ष कृति थी। जैसे वह मानते थे कि दुनिया के किसी भी कोने से आ रहे ज्ञान के लिए हमें स्वागतशील होना चाहिए। पश्चिम में व्याप्त सार्वजनिक जीवन का अनुशासन, आधुनिक व्यवस्थापन, सार्वजनिक स्थलों की सफाई, प्रशासन में पारदर्शिता जैसे कई गुणों को वे अनुकरणीय मानते थे तथा समन्वय से ही मनुष्य समाज की प्रगति के पुरस्कर्ता थे। जहाँ परस्पर सत्ता संघर्ष, संप्रदायों की हिंसक स्पर्धाएँ आदि से पूरी दुनिया प्रभावित थी, विवेकानंद विश्वबंधुत्व तथा विभिन्न मत-पंथों के प्रति आदर भाव से संघर्षमुक्त दुनिया की बातों को प्रतिपादित कर रहे थे। आज अद्यतन विश्व को भी उनके मार्गदर्शन की आवश्यकता अनुभव होती है।

तत्कालीन समय में सबसे प्रगत कोलकाता शहर के युवा नरेन्द्रनाथ ने समूची निराशा, संभ्रम एवं व्यक्तिगत जीवन त्याग कर अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए

कटिबद्ध होने के बदले एक प्रखर देशभक्त की तरह अपनी पूरी शक्ति को भारत में नव जागरण की लहर उत्पन्न करने के उदेश्य से झोंक दिया, वह लहर इतनी प्रभावी थी कि 1857 की निराशा व दमन भूलकर, अंग्रेजों के भ्रम से मुक्त होकर भविष्य में होने वाले स्वाधीनता आंदोलन व भारत के पुनरुत्थान के महायज्ञ का संगम निर्माण करवाने में सफल हो गयी। आज भी भारत का युवा विवेकानंद की उस हिम्मत से इतना प्रभावित है कि वह अकेले ही अमरिका जाकर पूरी दुनिया को बिना किसी साधन के ही प्रभावित कर आये। भारत जब अपमान, आत्मग्लानि एवं पराधीनता को झेल रहा था, तब एक देशभक्त युवा पूरी दुनिया से भारत के लोगों के लिए उपहार लेकर आया था। पश्चिम की चकाचौंध से प्रभावित होने के बदले उसने पश्चिम को ही अपने ज्ञान, सादगी व निर्मल हृदय के अपार प्रेम से सम्मोहित कर लिया। स्वामी विवेकानंद भारत के युवाओं से कुछ श्रेष्ठ कार्य करने की अपेक्षा रखते थे। वे भारत के भविष्य की महान योजना का जिम्मा युवाओं पर छोड़ गये। युवाओं में चारित्र्य - निर्माण, संयम की शिक्षा, त्याग का पाठ, श्रद्धा का विकास जैसी महत्वपूर्ण बातों के लिए शिक्षा को उसके अनुरूप बनाने के वे आग्रही थे। ठूँस-ठूँस कर शिक्षा देने की जगह हर युवा को उसकी ग्रहण-शक्ति के अनुसार संभ्रम समाप्त करते हुए आत्मविश्वास उत्पन्न करने वाली शिक्षा पर उनका जोर था। गरीबों एवं पिछड़ों के लिए आत्मीयता निर्माण हो इसलिए समाज के ऐसे वर्ग में जाने के उपक्रम, हिम्मत बढ़ाने हेतु मैदानी खेल, नारीयों के प्रति सम्यक् एवं सम्मानजनक दृष्टि, अंधश्रद्धाओं से मुक्त होने हेतु उचित श्रद्धा एवं ज्ञान का विकास, भारत के बारे में गौरवपूर्ण बातों की अनुभूति, पश्चिम के बारे में अनावश्यक अनुकरण को रोकने तथा पूर्वाग्रहों से मुक्त करने हेतु उसका उचित विश्लेषण, विज्ञान के संदर्भ में संतुलित दृष्टिकोण ताकि मनुष्य के जीवन में मूल्य तथा पर्यावरण का सम्यक् दृष्टिकोण विकसित हो जैसे कई विषयों पर उनका मार्गदर्शन आज भी उपयुक्त एवं समाधान देने वाला है। भारत में वास्तविक एकात्मता व अखंडता के लिए उनकी सम्यक् दृष्टि अनुकरणीय है।

किसी ने कहा है कि "भारत को समझना है, तो विवेकानंद को पढ़ो" भारत को आगे बढ़ाने के लिए उसे समझना आवश्यक है। इस पुस्तक के लेखन में हमारे मार्गदर्शक प्रा. दत्ता नाईक ने उनके जीवन चारित्र्य, विचार एवं मार्गदर्शन का समन्वय किया है। उन्होंने गंभीर ज्ञान की बातों को भी बड़े ही रोचक एवं सहज तरीके से इस

पुस्तक में प्रस्तुत करते समय उनके मूल संदर्भ तथा गंभीरता को पूरी तरह बनाये रखा है।

अन्त में, समाज के जाति-आधारित तथा अमीरी-गरीबी के भेदभाव को पूरी तरह नकारते हुए समरस तथा विकसित समाज के निर्माण के लिये स्वामी जी द्वारा किया गया आह्वान समझने हेतु हमें यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी लगेगी।

स्वामी विवेकानंद के आह्वान के अनरूप युवाओं के लिए यह पुस्तक उन्हें अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय लगाने हेतु प्रेरित करे, यही शुभ चिंतन!

-सुनील आम्बेकर
राष्ट्रीय संगठन मंत्री
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

●●●

संदर्भ साहित्य:-

1. स्वामी विवेकानंद समग्र
2. मेरा भारत- अमर भारत - स्वामी विवेकानंद
3. Vivekananda Reader - स्वामी विवेकानंद
4. अन्य और कई पुस्तकें

स्वामी विवेकानंद का संक्षिप्त जीवन परिचय

12 जनवरी	1863	- कलकत्ता में जन्म
	1879	- प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रवेश
नवंबर	1881	- रामकृष्ण परमहंस से प्रथम भेंट
	1884	- स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण, पिता का स्वर्गवास
16 अगस्त	1886	- रामकृष्ण परमहंस का निधन
	1886	- वराहनगर मठ की स्थापना
जनवरी	1887	- वराह नगर मठ में संन्यास की औपचारिक प्रतिज्ञा
	1890-93	- परिव्राजक के रूप में भारत-भ्रमण
25 दिसंबर	1892	- कन्याकुमारी में आगमन
13 फरवरी	1893	- प्रथम सार्वजनिक व्याख्यान सिकन्दराबाद में
31 मई	1893	- बम्बई से अमरीका रवाना
30 जुलाई	1893	- शिकागो आगमन
11 सितम्बर	1893	- विश्व धर्म सम्मेलन, शिकागो में प्रथम व्याख्यान
16 मई	1894	- हार्वर्ड विश्वविद्यालय में संभाषण
नवंबर	1894	- न्यूयॉर्क में वेदान्त समिति की स्थापना
मई-जुलाई	1896	- लंदन में धार्मिक कक्षाएँ
28 मई	1896	- ऑक्सफोर्ड में मैक्समुलर से भेंट
30 दिसम्बर	1896	- नेपल्स से भारत की ओर रवाना
15 जनवरी	1897	- कोलम्बो, श्रीलंका आगमन
19 फरवरी	1897	- कलकत्ता आगमन
1 मई	1897	- रामकृष्ण मिशन की स्थापना
19 मार्च	1899	- मायावती में अद्वैत आश्रम की स्थापना
20 जून	1899	- पश्चिमी देशों की दूसरी यात्रा
22 फरवरी	1900	- सैन फ्रांसिस्को में वेदान्त समिति की स्थापना
जून	1900	- न्यूयॉर्क में अन्तिम कक्षा
24 अक्टूबर	1900	- विएना, हंगरी, कुस्तुनतुनिया, ग्रीस, मिस्त्र आदि देशों की यात्रा
26 नवम्बर	1900	- भारत रवाना
9 दिसम्बर	1900	- बेलूर मठ आगमन
मार्च	1902	- बेलूर मठ में वापसी
4 जुलाई	1902	- महासमाधि